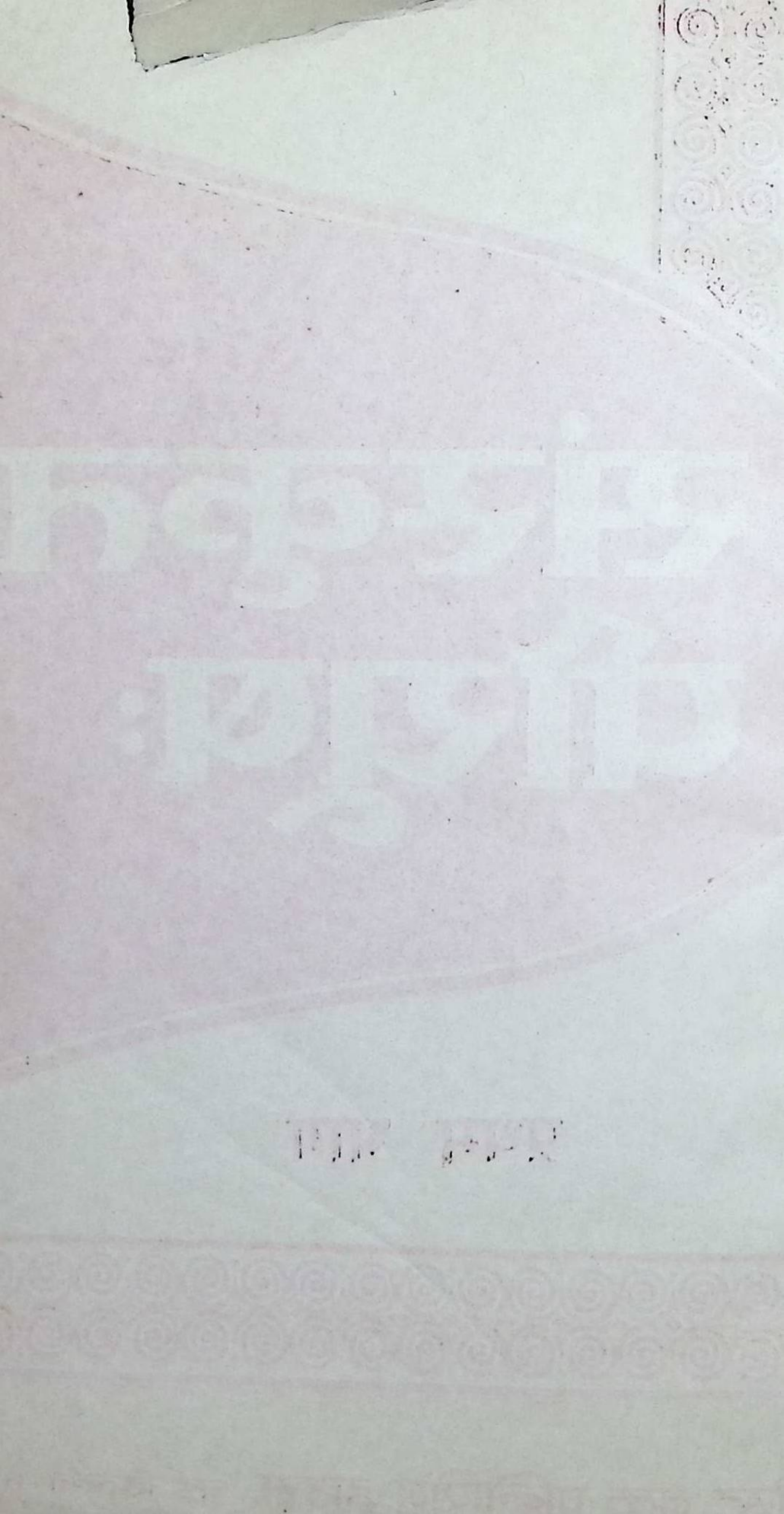
संस्कृत पीयूषः

प्रथम भाग

बेस्ट बुक पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली - 8



ारत सरकार की नवीन शिक्षा पद्धति के अनुसार राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम (सिलेबस) के अनुसार रचित

संस्कृत पीयूषः

प्रथम भाग

(दिल्ली, ऑल इण्डिया तथा भारत के सभी प्रदेशों के विद्यालयों के लिए)

रामजीलाल शास्त्री
एम. ए., (संस्कृत, हिन्दी)
साहित्याचार्य, बी. एड.
ऐग्लो संस्कृत वी. जे. उच्चतम माध्यमिक विद्यालय,
दरियागंज, नई दिल्ली-2

बैस्ट बुक पब्लिशिंग हाउस
(प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता)
33/11, वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110 008

प्रकाशक :

बैस्ट बुक पब्लिशिंग हाउस
(प्रकाशक एवम् पुस्तक विक्रेता)
33/11, वैस्ट पटेल नगर,
नई दिल्ली-110 008
दूरभाष : 574 89 44

सम्पादिका : मञ्जु जैन
(एम. ए)

मूल्य : 14 रुपये

Printed at: Payal Offset Press, A-29, Sudershan Park, N Delhi-15

प्रस्तावना

'संस्कृत-पीयूषः' आपके हाथों में समर्पित करते हुए अत्यन्त हर्ष हो रहा है। बालक-बालिकाओं के लिए विश्व की प्राचीनतम भाषा संस्कृत का सरलीकरण करते हुए इस पुस्तक की रचना भारत सरकार की नवीन शिक्षा पद्धति के अन्तर्गत राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्राथमिक एवम् माध्यमिक कक्षाओं के निर्धारित पाठ्यक्रम के आधार पर की गई है। इसमें दिल्ली, ऑल इण्डिया एवम् समस्त भारतीय प्रान्तों के प्राथमिक एवम् माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत बालक-बालिकाओं की आवश्यकताओं एवम् रुचियों को ध्यान में रखते हुए विषय-वस्तु को सरल एवम् सुबोध रूप में सचित्र प्रस्तुत किया गया है जिससे वे इसे सुगमता से पद-प्रति-पद हृदयंगम कर सकें।

इस कृति में छात्रों को संस्कृत भाषा का मूल ज्ञान बहुत रोचक तथा सरलतम ढंग से कराया गया है।

अकारान्त पुल्लिग तथा नपुंसकलिंग शब्दों, अकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों तथा विभिन्न धातुरूपों का लट्, लृट्, लङ् , लोट् चारों लकारों के तीनों पुरुषों (प्रथम, मध्यम, उत्तम) में इस तरह क्रमबद्ध रूप से प्रयोग किया गया है कि छात्र बहुत सरलता से संस्कृत भाषा के नियमों को समझ सकते हैं।

व्याकरण प्रखण्ड के अन्तर्गत संज्ञा, सर्वनाम शब्दरूप, धातुरूप, संख्यावाची शब्द, विभिन्न प्रत्यय, अव्यय, उपपद विभक्ति के नियम भी बहुत रोचक व वैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट किए गए हैं।

हमें विश्वास है कि यह कृति छात्रों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करने में बहुत उपयोगी सिद्ध होगी।

पुस्तक को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए विद्वानों के सुझाव आमन्त्रित हैं।

—लेखक

वियय सूची

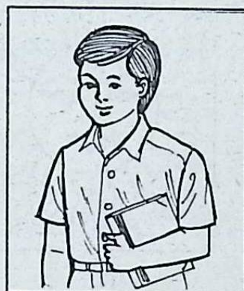
प्रथमः पाठः

अकारान्त पुल्लिग शब्द

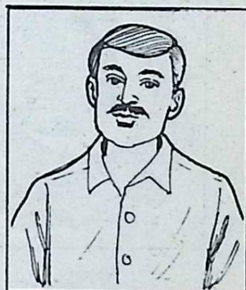
एकवचन



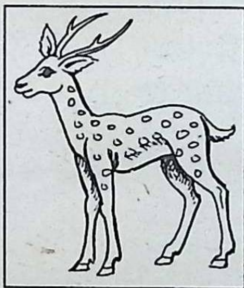
बालः



छात्रः



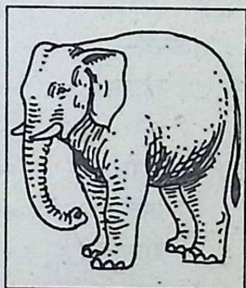
नरः



मृगः



अश्वः



गजः



वानरः



सिंहः



विडालः



मयूरः



शुकः



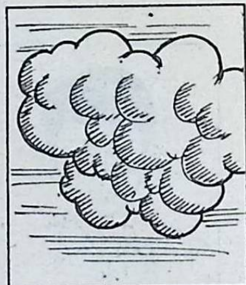
कपोतः



चन्द्रः



सूर्यः



मेघः

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

बालः	—	बालक (Boy)
नरः	—	आदमी (Man)
मृगः	—	हरिण (Deer)
अश्वः	—	घोड़ा (Horse)
गजः	—	हाथी (Elephant)
वानरः	—	बन्दर (Monkey)
सिंहः	—	शेर (Lion)
विडालः	—	बिलाव (He cat)
मयूरः	—	मोर (Peacock)
शुकः	—	तोता (Parrot)
कपोतः	—	कबूतर (Pigeon)
चन्द्रः	—	चन्द्रमा (Moon)
सूर्यः	—	सूरज (Sun)
मेघः	—	बादल (Cloud)

याद करो-

1. इन शब्दों को बार-बार बोल कर पढ़िये–
   मृगः, अश्वः, सिंहः, मयूरः, विडालः, शुकः, कपोतः, चन्द्रः, सूर्यः।
2. ऊपर लिखे हुए सभी शब्दों के आगे दो बिन्दु (:) लगे हुए हैं। इन बिन्दुओं को विसर्ग कहते हैं।
3. बालः, नरः, मृगः आदि सभी शब्दों के अन्त में 'अ' जुड़ा हुआ है जैसे–बालः में ब्+आ+ल्+अ। इस प्रकार के सभी शब्दों को जिनके अन्त में 'अ' जुड़ा होता है 'अकारान्त' शब्द कहते हैं।

लिखो–

4. अर्थ लिखिए–
   नरः, मृगः, अश्वः, वानरः, विडालः, मयूरः, शुकः, कपोतः, सिंहः।
5. संस्कृत शब्द लिखिए–
   बन्दर, बिलाव, कबूतर, हरिण, आदमी, तोता, चन्द्रमा, विद्यार्थी।
6. दो पक्षियों तथा तीन पशुओं के नाम संस्कृत में लिखिए।

द्वितीयः पाठः

वर्तमान काल (लट् लकार)

प्रथम पुरुष—एकवचन

सः, शिष्यः, कुक्कुरः, भक्तः, नृपः, पठ्, लिख्, धाव्, चल्, अस्

बालः पठति।

छात्रः पठति।

सः पठति।





छात्रः लिखति।

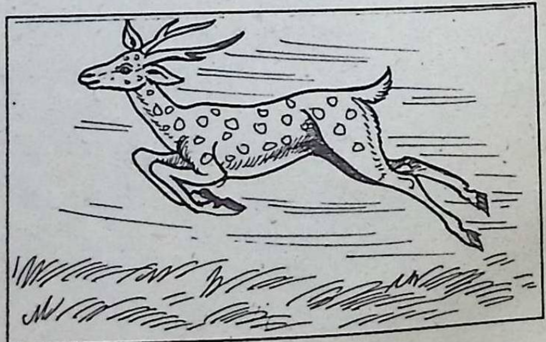
शिष्यः लिखति।

सः लिखति।

मृगः धावति।

अश्वः धावति।

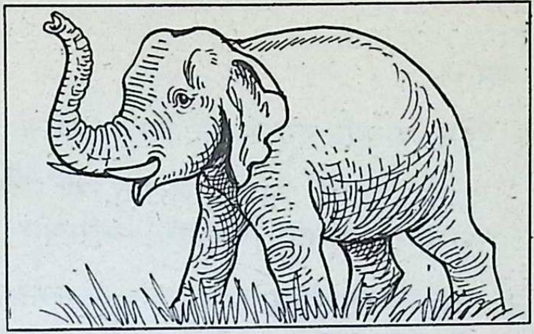
कुक्कुरः धावति।



गजः चलति।

सिंहः चलति।

सः चलति।





सः नृपः अस्ति।

सः भक्तः अस्ति।

सः नरः अस्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

सः	—	वह (He)
शिष्यः	—	शिष्य (Pupil)
कुक्कुरः	—	कुत्ता (Dog)
भक्तः	—	भक्त (Devotee)
नृपः	—	राजा (King)
पठ्	—	पढ़ना (To read)
लिख्	—	लिखना (To write)
धाव्	—	दौड़ना (To run)
चल्	—	चलना (To walk)
अस् (ति)	—	है (Is)

याद करो–

1. इन वाक्यों को पढ़ने का अभ्यास कीजिए–

   छात्रः पठति, शिष्यः लिखति, सः लिखति, अश्वः धावति, कुक्कुरः धावति, सः नृपः अस्ति।

2. पठ्, लिख्, धाव्, चल्, अस् ये सभी मूल धातुएँ (क्रियाएँ) हैं। इन सबके अन्त में 'अति' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। इस 'अति' के जुड़ जाने से पठ् + अति, लिख् + अति, पठति, लिखति आदि क्रियाएँ बन जाती हैं।

3. वर्तमान काल, प्रथम पुरुष, एकवचन कर्ता के साथ– पठति, लिखति, चलति आदि क्रियाएँ जोड़ने से वाक्य बनता है।

लिखो–

4. रिक्त स्थानों में क्रियाएँ जोड़िए।

   शिष्यः ....।   छात्रः ....।
   वानरः ....।   कुक्कुरः ....।
   सिंहः ....।   सः नृपः ....।

5. हिन्दी में अर्थ लिखिए–

   छात्रः पठति, नरः धावति, वानरः चलति, शिष्यः लिखति, सः नृपः अस्ति।

6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

   (क) वह पढ़ता है।   (ख) हरिण दौड़ता है।
   (ग) हाथी चलता है।   (घ) वह भक्त है।
   (ङ) वह बालक लिखता है। (च) कुत्ता दौड़ता है।

तृतीयः पाठः

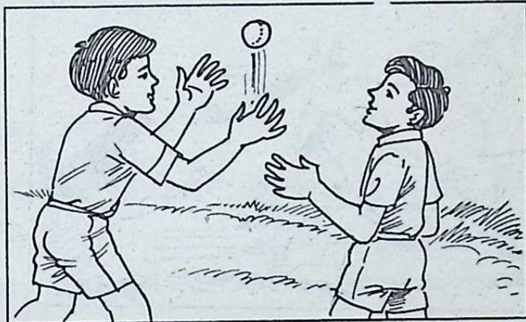
प्रथम पुरुष—द्विवचन

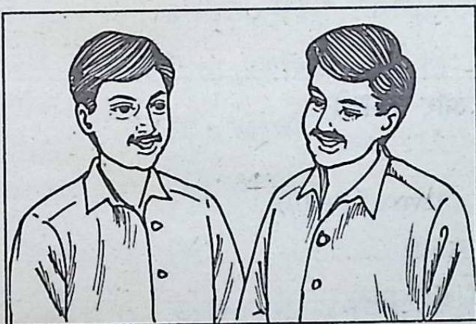
तौ, सैनिकौ, अपि, क्रीड् , वद्, हस्, स्तः, नम्, रक्ष्

बालौ खेलतः।

छात्रौ क्रीडतः।

तौ वदतः।





नरौ हसतः।

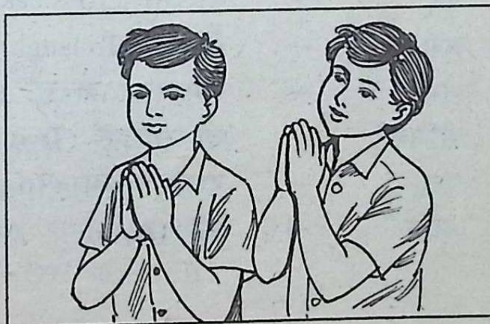
रमेशः सुरेशः च चलतः।

तौ भक्तौ हसतः।

रामः श्यामः च नमतः।

शिष्यौ नमतः।

तौ बालौ धावतः।

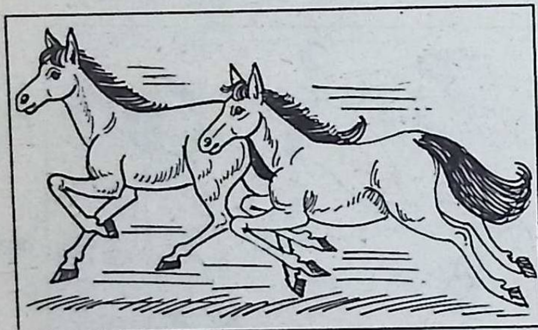


सैनिकौ रक्षतः।

तौ नरौ चलतः।

तौ सैनिकौ स्तः।





अश्वौ धावतः।

मृगौ न धावतः।

तौ अपि चलतः।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

तौ	–	वे दो (Two of them)
च	–	और (And)
क्रीड्	–	खेलना (To play)
वद्	–	बोलना (To speak)
हस्	–	हँसना (To laugh)
नम्	–	नमस्कार करना (To salute)
सैनिकौ	–	दो सैनिक (Two soldiers)
रक्ष्	–	रक्षा करना (To protect)
अपि	–	भी (Also)

याद करो—

1. बार-बार बोलने का अभ्यास कीजिए—

छात्रौ क्रीडतः, तौ वदतः, नरौ हसतः, तौ स्तः, तौ बालौ धावतः, सैनिकौ रक्षतः।

2. ऊपर लिखे सभी वाक्यों के अन्त में क्रियाओं में 'अतः' प्रत्यय जुड़ा हुआ है। इस प्रकार 'अतः' प्रत्यय मूल क्रियाओं में जोड़ने से वर्तमान काल (लट् लकार) प्रथम पुरुष द्वि.व. की क्रिया बन जाती है।

लिखो—

3. संस्कृत शब्द लिखिए—

दो छात्र, दो सैनिक, वे दो, खेलना, भी, नमस्कार करना, रक्षा करता है।

4. हिन्दी शब्द लिखिए—

क्रीडतः, वदतः, नमतः, रक्षतः, सैनिकौ, च, अपि, तौ, मृगौ।

5. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) छात्रौ ....। (ख) तौ ....।

(ग) सैनिकौ ....। (घ) .... चलतः।

(ङ) .... धावतः। (च) .... अपि हसतः।

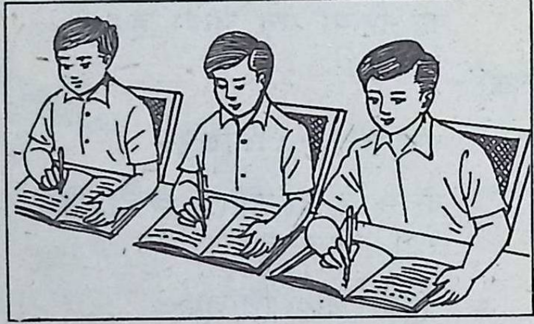
6. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) दो छात्र दौड़ते हैं।
(ख) दो बालक हँसते हैं।
(ग) दो कुत्ते दौड़ते हैं।
(घ) वे दो भक्त हैं।
(ङ) हाथी भी चलता है।
(च) दो छात्र नमस्कार करते हैं।
(छ) सैनिक रक्षा करता है।

चतुर्थः पाठः

प्रथम पुरुष—बहुवचन

किम्, सिंहाः, खगाः, भ्रमराः, कूज्, गुञ्ज्, गर्ज्, गम् (गच्छ्), सन्ति, तु

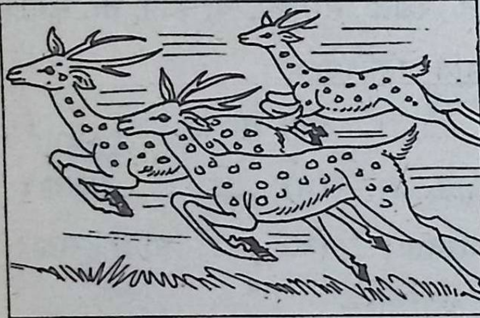


रामः श्यामः गोपालः

च लिखन्ति।

ते के सन्ति?

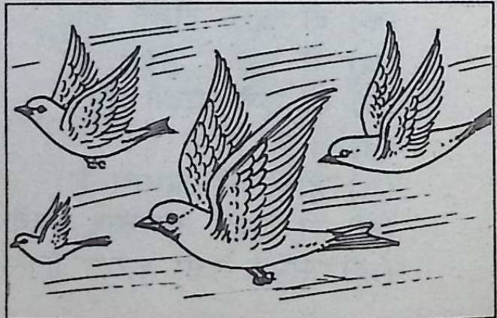
ते छात्राः सन्ति।



मृगाः धावन्ति।

किम् सिंहाः धावन्ति?

सिंहाः न धावन्ति।



खगाः कूजन्ति

किम् भ्रमराः कूजन्ति?

भ्रमराः तु गुञ्जन्ति।

बालः नमति।	बालौ नमतः।	बालाः नमन्ति।
सिंहः गर्जति।	सिंहौ गर्जतः।	सिंहाः गर्जन्ति।
रामः गच्छति।	रामः श्यामः च गच्छतः।	रामः, श्यामः मोहनः च गच्छन्ति।
सः छात्रः अस्ति।	तौ छात्रौ स्तः।	ते छात्राः सन्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

किम्	—	क्या (What)
सिंहः	—	शेर (Lion)
न	—	नहीं (Not)
खगः	—	पक्षी (Bird)
भ्रमरः	—	भौंरा (A large black bee)
कूज्	—	चहकना (To chirp)
गुञ्ज्	—	गूँजना (To buzz, to hum)
गर्ज्	—	दहाड़ना (गरजना) (To roar)
(गम्) गच्छ्	—	जाना (To go)
सन्ति (अस्)	—	हैं (Are)
तु	—	तो (On the other hand)

याद करो—

1. बार-बार बोलकर याद कीजिए—

नरः	नरौ	नराः
छात्रः	छात्रौ	छात्राः
चलति	चलतः	चलन्ति
अस्ति	स्तः	सन्ति

2. वर्तमान काल (लट् लकार) प्रथम पुरुष बहुवचन कर्ता के साथ मूल धातु (क्रिया) के अन्त में "अन्ति" जोड़ने से पूर्ण क्रिया बनती है। जैसे—पठ्+अन्ति=पठन्ति, चल्+अन्ति=चलन्ति।

लिखो–

3. संस्कृत में लिखिए–
चहकना, भौंरा, शेर, गूँजना, पक्षी, गरजना।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
(क) खगाः ....।
(ख) सिंहाः ....।
(ग) भ्रमराः ....।
(घ) रामः श्यामः च ....।
(ङ) .... गच्छन्ति।
(च) ते .... सन्ति।
(छ) .... स्तः।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–
(क) सैनिक रक्षा करते हैं।
(ख) पक्षी कूजते हैं।
(ग) घोड़े दौड़ते हैं।
(घ) शेर गरजते हैं।
(ङ) वे छात्र नहीं हैं।
(च) क्या बालक नहीं पढ़ता है?
(छ) मोहन और सोहन लिखते हैं।

पंचमः पाठः

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

एकवचन



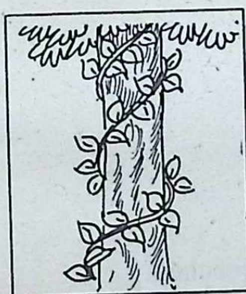
छात्रा



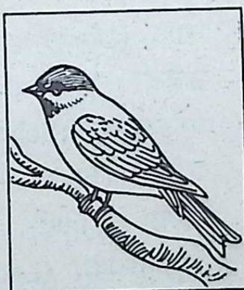
बालिका



अध्यापिका



लता



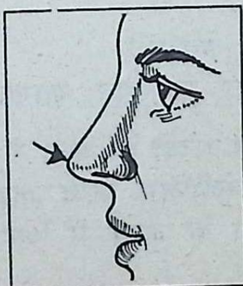
चटका



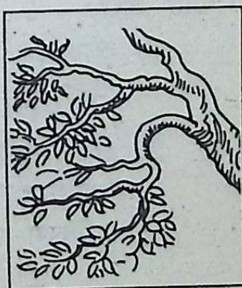
गीता



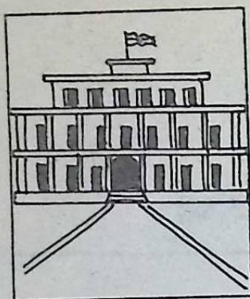
अम्बा

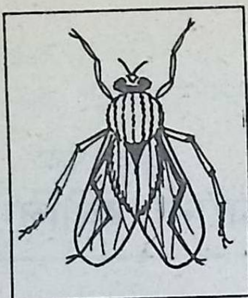


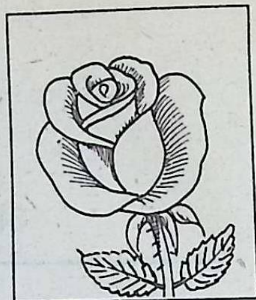
नासिका



शाखा


पाठशाला


मक्षिका


कलिका

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

छात्रा	–	विद्यार्थी (लड़की) (Girl Student)
बालिका	–	लड़की (Girl)
लता	–	बेल (Creeper)
चटका	–	चिड़िया (A sparrow)
अम्बा	–	माँ (Mother)
गीता	–	गीता (A book of Gita)
नासिका	–	नाक (Nose)
शाखा	–	टहनी (A branch)
पाठशाला	–	पाठशाला (School)
मक्षिका	–	मक्खी (Fly)
कलिका	–	कली (A bud)
अध्यापिका	–	अध्यापिका (Lady Teacher)

याद करो–

1. बोलकर याद कीजिए–
   चटका, अम्बा, नासिका, शाखा, मक्षिका, कलिका।

2. जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'आ' जुड़ा होता है उन्हें 'आकारान्त' स्त्रीलिंग शब्द कहते हैं। कुछ अकारान्त पुल्लिग शब्दों के अन्त में 'आ' जोड़ने से भी स्त्रीलिंग

शब्द बनते हैं। जैसे—बालः-बाला, छात्रः-छात्रा, अजः-अजा।

लिखो—

3. संस्कृत में लिखिए—

   माँ, टहनी, मक्खी, बेल, कली, चिड़िया।

4. पुल्लिंग शब्द बनाइए—

   अध्यापिका, बालिका, छात्रा, अजा, बाला।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

   (क) लड़की पढ़ती है।

   (ख) अध्यापिका लिखती है।

   (ग) छात्रा खेलती है।

   (घ) हाथी चलते हैं।

   (ङ) कुत्ता दौड़ता है।

   (च) वे दो छात्र हैं।

षष्ठः पाठः

प्रथम पुरुष—स्त्रीलिंग

सा, ते, ताः, विकस्, कन्या



उमा लिखति।

छात्रा लिखति।

सा लिखति।



उमा रमा च क्रीडतः।

बालिके क्रीड़तः।

ते न क्रीडतः।



कन्याः वदन्ति।

किम् बालिकाः वदन्ति?

ताः बालिकाः अपि वदन्ति।

सा गच्छति।	ते गच्छतः।	ताः गच्छन्ति।
छात्रा क्रीडति।	छात्रे क्रीडतः।	छात्राः क्रीडन्ति।
कलिका विकसति।	कलिके विकसतः।	कलिकाः विकसन्ति

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

सा – वह (स्त्री.) (She)
ते – वे दो (स्त्री.) (Two of them Fem.)
ताः – वे सब (स्त्री.) (They all Fem.)
कन्या – लड़की (Girl)
विकस् – खिलना (To flower)

याद करो–

1. बोलकर याद कीजिए–

सा वदति।	ते वदतः।	ताः वदन्ति।
कन्या हसति।	कन्ये हसतः।	कन्याः हसन्ति।

2. आकारान्त स्त्रीलिंग बहुवचन शब्द के अन्त में आः लगता है। जबकि एकवचन में केवल 'आ' तथा. द्वि.व. कर्ता में 'आ' के स्थान पर 'ए' जुड़ता है।

3. आकारान्त स्त्रीलिंग कर्ताओं के साथ मूल क्रियाओं के अन्त में एकवचन, द्वि.व., बहुवचन में पुल्लिग की तरह अति, अतः, अन्ति ही जोड़कर क्रिया बनाते हैं।

लिखो–

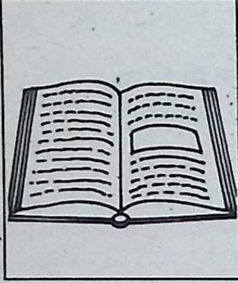
4. अन्तर स्पष्ट कीजिए–
सा लिखति, सः लिखति। ते हसतः, तौ हसतः। ताः गच्छन्ति, ते गच्छन्ति।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–
(क) लड़की दौड़ती है।
(ख) वे नहीं पढ़ती हैं।
(ग) वे दो छात्राएँ हँसती हैं।
(घ) वह क्या बोलती है?
(ङ) वे कलियाँ खिलती हैं।

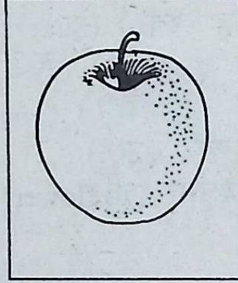
सप्तमः पाठः

अकारान्त नपुंसकलिंग

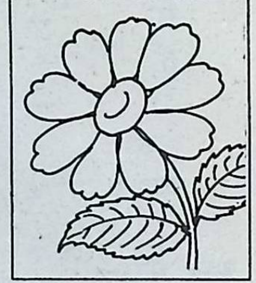
एकवचन



पुस्तकम्



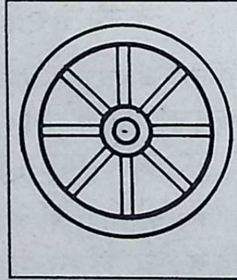
फलम्



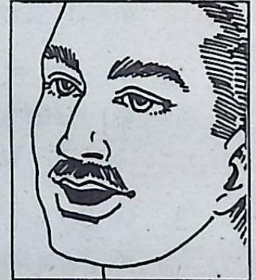
पुष्पम्



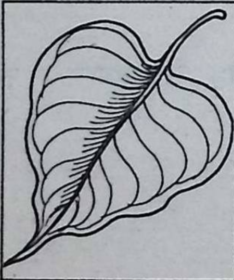
वस्त्रम्



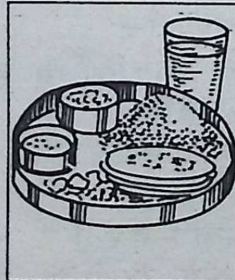
चक्रम्



मुखम्



पत्रम्

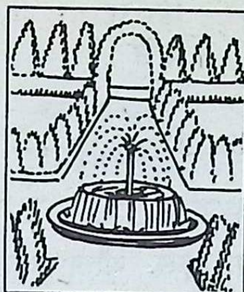


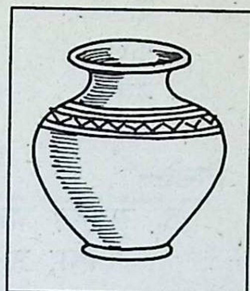
भोजनम्



कमलम्


नेत्रम्


उद्यानम्


पात्रम्

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

पुस्तकम् – पुस्तक (Book)
फलम् – फल (Fruit)
पुष्पम् – फूल (Flower)
वस्त्रम् – कपड़ा (Cloth)
चक्रम् – पहिया (Wheel)
मुखम् – मुँह (Mouth)
पत्रम् – पत्ता (Leaf)
भोजनम् – भोजन (Meal)
कमलम् – कमल का फूल (Lotus flower)
नेत्रम् – आँख (Eye)
उद्यानम् – बगीचा (Garden)
पात्रम् – बर्तन (Pot)

याद करो–

1. याद कीजिए–
आम्रम-आम, भूषणम्-आभूषण, रुप्यकम्-रुपया, गृहम्-घर, शस्त्रम्-हथियार, मित्रम्-मित्र।

2. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के अन्त में 'अम्' आता है। इनके रूप भी इस प्रकार बनते हैं–

ए. व.	द्वि. व.	ब.व.
फलम्	फले	फलानि
पत्रम्	पत्रे	पत्राणि

लिखो—

3. संस्कृत शब्द लिखिए—
   कपड़ा, पहिया, फूल, आँख, आम, बर्तन।

4. पुल्लिग तथा नपुंसकलिंग शब्द अलग-अलग कीजिए—
   पत्रम्, हस्तः, नेत्रम्, बालः, छात्रः, कमलम्, गजः, मित्रम्।

अष्टमः पाठः

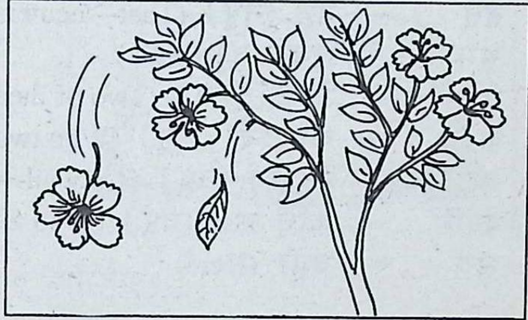
प्रथम पुरुष-नपुंसकलिंग

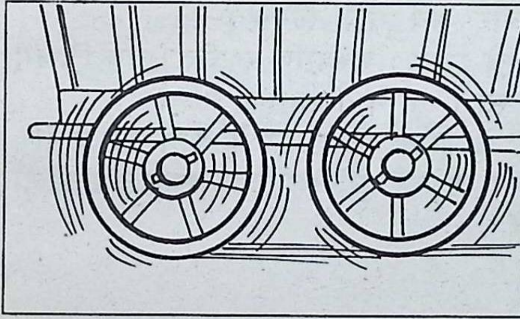
पत्, तत्, भ्रम्, ते, के, तानि, कानि, अत्र।

पुष्पम् पतति।

किम् फलम् पतति ?

तत् पत्रम् पतति।





चक्रे भ्रमतः।

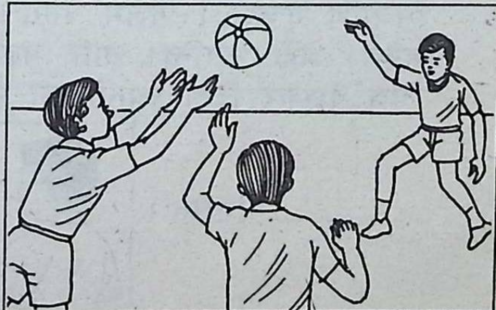
ते के भ्रमतः ?

ते चक्रे एव भ्रमतः।

तानि कानि सन्ति ?

तानि मित्राणि सन्ति।

तानि मित्राणि अत्र क्रीडन्ति।



पत्रम् पतति।	पत्रे पततः।	पत्राणि पतन्ति।
मित्रम् अस्ति।	मित्रे स्तः।	मित्राणि सन्ति।
चक्रम् भ्रमति।	चक्रे भ्रमतः।	चक्राणि भ्रमन्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

पत् — गिरना (To fall)
तत् — वह (नपुं.) (That—neuter gender)
भ्रम् — घूमना (To walk)
ते — वे दो (नपुं.) (Two of them—neuter gender)
के — कौन दो (नपुं.) (Who two—neuter gender)
तानि — वे सब (नपुं.) (They all—neuter gender)
कानि — कौन सब (नपुं.) (Who all—neuter gender)
अत्र — यहाँ (Here)

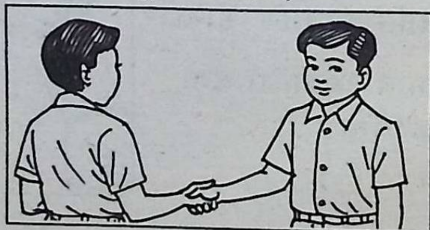
याद करो–

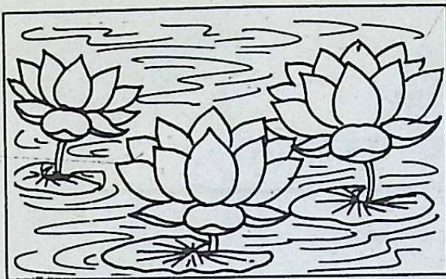
1. बोलकर पढ़िये और अर्थ याद कीजिए–
   शस्त्रम् रक्षति। शस्त्रे रक्षतः। शस्त्राणि रक्षन्ति। तत् चित्रम् अस्ति। ते चित्रे स्तः। तानि चित्राणि सन्ति!
2. नपुंसकलिंग शब्दों के साथ भी वचन के अनुसार क्रमशः वही क्रियाएँ आती हैं जो पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग शब्दों के साथ आती हैं।

लिखो–

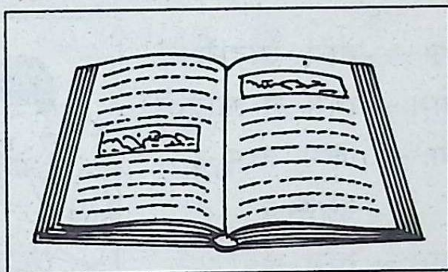
3. इन वाक्यों की क्रियाओं को शुद्ध करके लिखिए–
   मित्राणि गच्छतः। फलम् पततः। चित्राणि स्तः। नेत्रम् सन्ति। चक्रे भ्रमन्ति। तानि पतति।
4. चित्र देखकर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

.... मिलतः।





.... विकसन्ति।



.... अस्ति।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) फल गिरते हैं।

(ख) शस्त्र रक्षा करता है।

(ग) वह पुस्तक है।

(घ) दो छात्राएँ पढ़ती हैं।

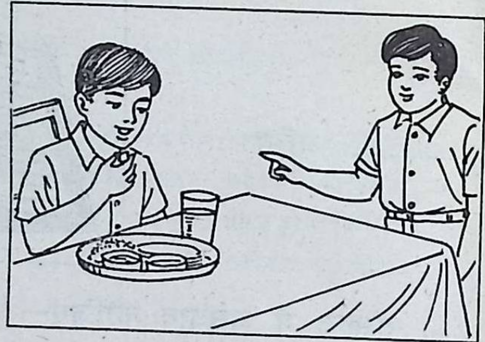
(ङ) लड़के यहाँ दौड़ते हैं।

नवमः पाठः

मध्यम पुरुष-एकवचन

त्वम्, कदा, कुत्र, कथम्, वस्, खाद्

रामः– त्वम् खादसि।
श्यामः– त्वम् न खादसि।
रामः– किम् त्वम् न पठसि?
श्यामः– त्वम् कदा पठसि?

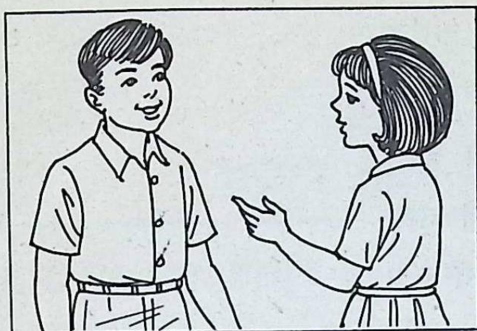




रमा– किम् त्वम् लिखसि?
उमा– त्वम् अपि तु लिखसि।
रमा– त्वम् चलसि।
उमा– त्वम् कुत्र चलसि?

रमेशः– त्वम् राधा असि।
राधा– त्वम् रमेशः असि।
रमेशः– त्वम् कुत्र वससि?
राधा– त्वम् अत्र वससि।





गीता— मोहन! त्वम् हससि।

मोहनः— त्वम् कथं न हससि?

गीता— त्वम् वृथा वदसि।

मोहनः— त्वम् कथं वदसि?

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

त्वम्	—	तू, तुम (Thou, you)
कदा	—	कब (When)
कुत्र	—	कहाँ (Where)
कथम्	—	क्यों (Why)
वस्	—	रहना (To live)
खाद्	—	खाना (To eat)

याद करो—

1. इन वाक्यों को बार-बार पढ़िए—
   त्वम् खादसि। त्वम् लिखसि। त्वम् कथं हससि? त्वम् सदा वदसि। त्वम् कुत्र चलसि?
2. मध्यम पुरुष एक वचन कर्ता 'त्वम्' पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग दोनों लिंगों में प्रयोग होता है। वाक्य बनाने के लिए इसके साथ मूल धातु में 'असि' प्रत्यय जोड़ते हैं। जैसे— त्वम् पठसि, त्वम् लिखसि आदि।

लिखो—

3. त्वम् के साथ इन दी हुई मूल धातुओं में प्रत्यय जोड़कर वाक्य बनाइए। जैसे—त्वम् चलसि।
   लिख्, वस्, धाव्, खाद्, गम् (गच्छ्), पच्

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) तुम क्या लिखती हो?

(ख) तुम भी दौड़ते हो।

(ग) तुम कहाँ रहते हो?

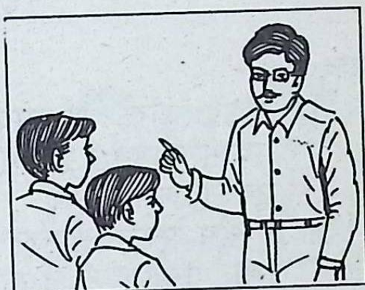
(घ) तुम सदा खेलते हो।

(ङ) राम और श्याम दौड़ते हैं।

दशमः पाठः

मध्यम पुरुष-द्विवचन

युवाम्, सदा, कदापि, हंसः, श्वेतः, बकः



अध्यापकः— युवाम् कुत्र गच्छथः

युवाम् सदा क्रीडथः।

युवाम् कदापि न पठथः।



अध्यापिका— त्वम् रमा असि।

त्वम् उमा असि।

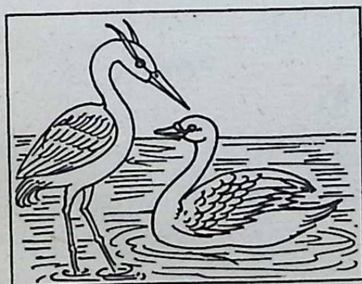
युवाम् कुत्र वसथः ?



अध्यापकः— त्वम् छात्रः असि।

त्वम् छात्रा असि।

युवाम् कुत्र पठथः ?



अध्यापिका— हंसः श्वेतः अस्ति।

बकः श्वेतः अस्ति।

युवाम् श्वेतौ स्थः।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

युवाम्	–	तुम दोनों (Both of you)
सदा	–	हमेशा (Always)
कदापि	–	कभी भी (Whenever)
हंसः	–	हंस (Swan)
श्वेतः	–	सफेद (White)
बकः	–	बगुला (Heron)

याद करो–

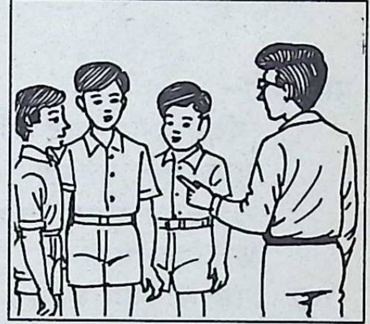
1. पढ़िए और अर्थ याद कीजिए–
युवाम् क्रीडथः। युवाम् कुत्र पठथः ? त्वम् किम् लिखसि ? युवाम् अत्र वसथः। त्वम् अपि क्रीडसि।
2. मध्यम पुरुष द्विवचन कर्ता 'युवाम्' का प्रयोग पु. तथा स्त्री. दोनों में ही होता है। इसके साथ मूल धातु में 'अथः' प्रत्यय जोड़ कर क्रिया का प्रयोग करते हैं। जैसे–युवाम् पठथः, युवाम् गच्छथः आदि।

लिखो–

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–
(क) .... पठसि।
(ख) .... लिखथः।
(ग) .... धावथः।
(घ) युवाम् ....।
(ङ) .... क्रीडसि।
(च) तौ ....।
4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–
(क) तुम दोनों कहाँ पढ़ते हो ?
(ख) तुम यहाँ खेलते हो।
(ग) राम और मोहन दौड़ते हैं।
(घ) तुम दोनों क्या लिखती हो ?
(ङ) वे दोनों खाते हैं।
(च) वे दोनों यहाँ रहती हैं।

एकादशः पाठः
मध्यम पुरुष-बहुवचन

यूयम्, चतुरः, कदापि, अधुना, वृथा, आ+नी (नय्), शनैः शनैः



छात्राः! यूयम् कुत्र गच्छथ?

किम् यूयम् न पठथ?

यूयम् चतुराः छात्राः न स्थ।



बालिकाः! यूयम् किम् क्रीडथ?

यूयम् सदा एव क्रीडथ।

यूयम् कदापि न पठथ।



बालकाः! यूयम् किम् पश्यथ?

यूयम् चित्रम् पश्यथ?

यूयम् अधुना वृथा भ्रमथ।

सः नमति।	तौ चलतः।	ते तिष्ठन्ति।
सा गच्छति।	ते खादतः।	ताः आनयन्ति।
त्वम् धावसि।	युवाम् आनयथः।	यूयम् शनैः-शनैः चलथ।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

यूयम्	—	तुम सब (You all)
चतुरः	—	योग्य (Clever)
कदापि	—	कभी (Sometime)
अधुना	—	अब (Now)
वृथा	—	व्यर्थ (Useless)
आ+नी (नय्)	—	लाना (To bring)
शनैः-शनैः	—	धीरे धीरे (Slowly)

याद करो—

1. पढ़िए और याद कीजिए—
यूयम् कुत्र गच्छथ? यूयम् सदा एव क्रीडथ। यूयम् कदापि न पठथ। यूयम् चित्रम् पश्यथ। ते आनयन्ति। यूयम् शनैः शनैः चलथ।
2. मध्यम पुरुष बहुवचन पु. तथा स्त्री. कर्ता 'यूयम्' के साथ मूल धातु के अन्त में 'अथ' प्रत्यय जोड़कर क्रिया बनाते हैं। जैसे—यूयम् पठथ, यूयम् क्रीडथ।

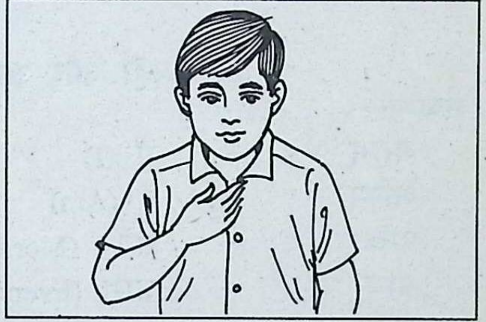
लिखो—

3. त्वम् चलसि। युवाम् चलथः। यूयम् चलथ। इन वाक्यों के अनुसार त्वम्, युवाम्, यूयम् के साथ लिख्, पच्, खाद्, क्रीड्, गम् (गच्छ्), धाव् धातुओं की क्रियाएँ बनाकर जोड़िये।
4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) वे दोनों जाते हैं।
(ख) तुम दोनों नहीं खाते हो।
(ग) तुम सब व्यर्थ घूमते हो।
(घ) तुम कहाँ जाते हो?
(ङ) मोहन, सोहन तुम दोनों कहाँ पढ़ते हो?
(च) तुम सब चित्र देखते हो।
(छ) तुम दोनों कहाँ खेलते हो?

द्वादशः पाठः

उत्तम पुरुष-एकवचन

अहम्, अस्मि, प्रातः, सायं, प्रसन्नः, तृ (तर्), सैनिकः, रक्ष्, वार्तालापः, चित्रकारः



अहम् बालः अस्मि।
अहम् प्रातः भ्रमामि।
अहम् सायं पठामि।



अहम् राधा अस्मि।
अहम् प्रसन्नः अस्मि।
अहम् सायं तरामि।



त्वम् कः असि ?
अहम् सैनिकः अस्मि।
अहम् रक्षामि।

(वार्तालापः)

अजयः — त्वम् कः असि ?
विजयः — अहम् चित्रकारः अस्मि।
अजयः — त्वम् का असि ?
राधा — अहम् अध्यापिका अस्मि।
अजयः — राधा! त्वम् किम् खादसि ?
राधा — अहम् न खादामि, अहम् तु पचामि।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

अहम्	—	मैं (I)
अस्मि	—	हूँ (Am)
प्रातः	—	सवेरे (Morning)
सायं	—	शाम (Evening)
प्रसन्न	—	खुश (Happy)
तृ (तर्)	—	तैरना (To swin)
सैनिकः	—	सेना का आदमी (Soldier)
रक्ष्	—	रक्षा करना (To protect)
वार्तालापः	—	बातचीत (संवाद) (Conversation)
चित्रकारः	—	चित्र बनाने वाला (Painter)

याद करो—

1. पढ़िए और याद कीजिए—

   अहम् लिखामि, अहम् प्रातः भ्रमामि। अहम् सायं पठामि। अहम् प्रसन्नः अस्मि। त्वम् कः असि ? अहम् सैनिकः अस्मि।

2. उत्तम पुरुष पुल्लिग तथा स्त्रीलिंग एकवचन कर्ता 'अहम्' के साथ मूल धातु में 'आमि' प्रत्यय जोड़कर संस्कृत में वाक्य बनाते हैं। जैसे—अहम् पठामि, अहम् लिखामि आदि।

लिखो—

3. संस्कृत शब्द लिखिए—

सुबह, शाम, कहाँ, कभी भी, तुम सब, मैं, हूँ।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) .... तरसि।

(ख) .... क्रीडामि।

(ग) .... चलथः।

(घ) युवाम् ....।

(ङ) ताः ....।

(च) यूयम् ....।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) तुम कौन हो?

(ख) तुम सब कहाँ घूमते हो?

(ग) मैं चित्रकार हूँ।

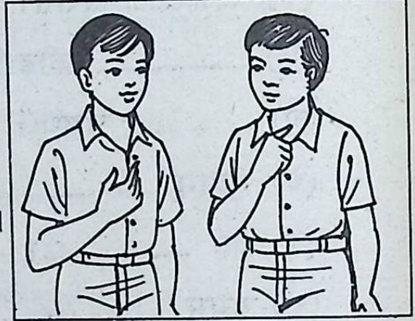
(घ) मैं शाम को खेलता हूँ।

(ङ) वह अध्यापिका जाती है।

त्रयोदशः पाठः

उत्तम पुरुष-द्विवचन

आवाम्, स्वः, बहिः, अद्य. तत्र, अजः, वृषः, चर्, अश्वः



रामः राजीवः च –
आवाम् बालौ स्वः।
आवाम् प्रातः भ्रमावः।
आवाम् सायं क्रीडावः।



लता रमा च –
आवाम् कन्ये स्वः।
आवाम् बहिः गच्छावः।
अद्य आवाम् न पठावः।



सुनीलः सुधा च –
आवाम् क्रीडावः।
आवाम् तत्र गायावः।
आवाम् अत्र वसावः।

वार्तालापः

राजीवः – संजीव! त्वं कुत्र वससि रामः च कुत्र?
संजीवः – आवाम् तत्र एव वसावः।

वृषः — अज! अहम् तत्र चरामि। किं त्वम् न चरसि?
अजः — अहम् अपि चरामि। त्वम् अपि चरसि। आवाम् तत्र एव चरावः।

(अश्वः आगच्छति)

अश्वः — युवाम् अत्र चरथः। अहम् तत्र चरामि। आवाम् एव चरावः।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

आवाम् — हम दोनों (We two)
स्वः (अस्)— हैं (हम दो) [Are (We two)]
बहिः — बाहर (Out)
अद्य — आज (Today)
तत्र — वहाँ (There)
अजः — बकरा (He-goat)
वृषः — बैल (Ox)
अश्वः — घोड़ा (Horse)
चर् — चरना (To graze)

याद करो—

1. पढ़िये और याद कीजिए—

आवाम् बालौ स्वः। आवाम् सायं क्रीडावः। त्वं कुत्र वससि? आवाम् तत्र एव वसावः। आवाम् तत्र चरावः।

2. उत्तम पुरुष पु. तथा स्त्री. द्विवचन कर्ता 'आवाम्' के साथ मूल धातु में 'आवः' प्रत्यय जोड़कर वाक्य बनाते हैं। जैसे—आवाम् लिखावः, आवाम् चरावः आदि।

लिखो—

3. अहम्, **आवाम्** के साथ नीचे दी हुई धातुओं में क्रमशः **'आमि, आवः' प्रत्यय जोड़कर** वाक्य बनाइए—

क्रीड्, चर्, वस्, धाव्, पच्, लिख्।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) मै यहाँ रहता हूँ।

(ख) तुम दोनों कहाँ जाते हो?

(ग) हम दोनों यहाँ पढ़ते हैं।

(घ) हम दोनों दौड़ते हैं।

(ङ) तुम सब क्या लिखते हो?

(च) वे दोनों ही गाती हैं।

(छ) तुम दोनों नहीं गाते हो।

चतुर्दशः पाठः

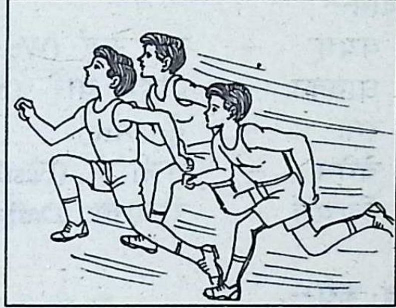
उत्तम पुरुष-बहुवचन

वयम्, धावकः, स्मः, वेगेन, नित्यम्

वयम् धावकाः स्मः।

वयम् वेगेन धावामः।

वयम् पठामः लिखामः च।





वयं कन्याः स्मः।

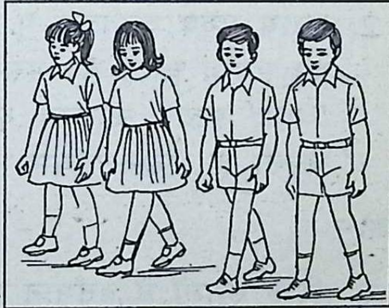
वयं अति वेगेन तरामः।

वयं नित्यं धावामः।

छात्राः— यूयम् कुत्र गच्छथ?

वयम् तत्र नित्यम् गच्छामः।

वयम् तत्र क्रीडामः, धावामः, तरामः च।



वार्तालापः

मोहनः— तौ तत्र भ्रमतः, किम् त्वं न गच्छसि?

सोहनः— वयम् सर्वे एव तत्र भ्रमामः।

मोहनः— यत्र रामः पठति, किं तत्र यूयम् न पठथः?

सोहनः— यत्र सः पठति तत्र एव वयम् अपि पठामः।

मोहनः– यत्र बालिकाः लिखन्ति तत्र त्वम् न तिष्ठसि।
सोहनः– वयम् एकत्र एव तिष्ठामः लिखामः च।
मोहनः– किम् त्वम् गायकः असि?
सोहनः– अहम् गायकः न अस्मि। अहम् तु लेखकः अस्मि।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

वयम् – हम सब (We all)
धावकाः – दौड़ने वाले (Runners)
स्मः – हैं (Are)
वेगेन – तेजी से (Fastly)
नित्यम् – रोजाना (Daily)

याद करो–

1. बोलकर पढ़ो और अर्थ याद करो–

वयम् वेगेन धावामः। वयं नित्यं धावामः। यूयम् कुत्र गच्छथ? वयम् तत्र नित्यं गच्छामः। वयम् सर्वे तत्र भ्रमामः।

2. उत्तम पुरुष बहुवचन पु. तथा स्त्री. में 'वयम्' सर्वनाम का प्रयोग होता है। इसके साथ मूल धातु के अन्त में 'आमः' प्रत्यय जोड़कर वर्तमान काल (लट्) की क्रिया बनती है। जैसे–वयम् पठामः, वयम् क्रीडामः आदि।

लिखो–

3. रिक्त स्थानों में वर्तमान काल (लट् लकार) की क्रियाओं के रूप लिखिए–

धातु	सः	तौ	ते
पठ्	....	....	....
खाद्	....	....	....

	त्वम्	युवाम्	यूयम्
लिख्	....	....	....
क्रीड्	....	....	....

	अहम्	आवाम्	वयम्
पच्	....	....	....
धाव्	....	....	....

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
   (क) मैं लिखता हूँ।
   (ख) वह कहाँ जाती है?
   (ग) तुम सब कहाँ दौड़ते हो?
   (घ) हम पढ़ते हैं।
   (ङ) हम दोनों नहीं तैरते हैं।
   (च) हम वहाँ घूमते हैं।

पञ्चदशः पाठः

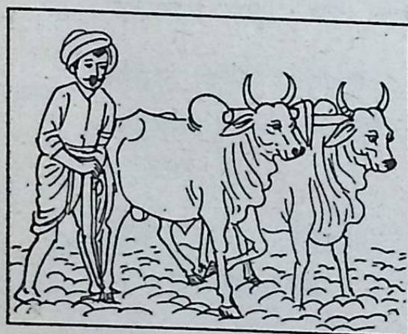
कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति)

(अकारान्त पुल्लिग शब्द)

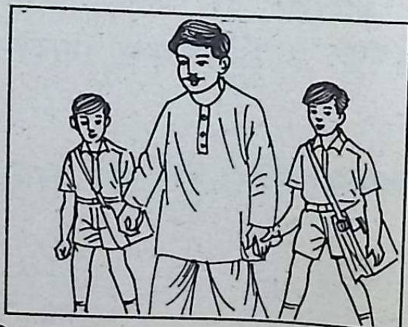
प्रातः, अन्धकारः, जनकः, शिक्षकः, कृषकः, वृषः, वानरः, सेवकः, मोदकः, ईश्वरः, दुग्धम्, देवालयः



सूर्यः प्रातः अन्धकारं नाशयति।
बालकाः जनकम् नमन्ति।
छात्राः विद्यालयं गच्छन्ति।
छात्राः प्रातः शिक्षकम् नमन्ति।
बालाः तत्र पाठं पठन्ति।



कृषकः क्षेत्रं गच्छति।
कृषकः वृषौ तत्र नयति।
बालः वानरौ पश्यति।
सेवकः अश्वौ आनयति।
जनकः पुत्रौ वदति।



जनकः पुत्रान् नयति।
बालिकाः पाठान् पठन्ति।
राधा मोदकान् खादति।
ईश्वरः भक्तान् रक्षति।
वयम् मृगान् पश्यामः

त्वम् पाठं पठसि अथवा लिखसि ?
अहम् पाठम् पठामि लेखं च लिखामि।

बालः दुग्धम् पिबति भोजनम् न खादति।
शिक्षकः छात्रान् आनयति।
भक्ताः देवालयम् गच्छन्ति देवान् च नमन्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

प्रातः	–	सुबह (Morning)
जनकः	–	पिता (Father)
अन्धकार	–	अंधेरा (Darkness)
शिक्षकः	–	अध्यापक (Teacher)
कृषकः	–	किसान (Farmer)
वृषः	–	बैल (Ox)
वानरः	–	बन्दर (Monkey)
सेवकः	–	नौकर (Servant)
मोदकः	–	लड्डू (A kind of sweet)
ईश्वरः	–	भगवान (God)
दुग्धम्	–	दूध (Milk)
देवालयः	–	मन्दिर (Temple)
नश् (नाशाय)	–	नाश करना (To destroy)

याद करो–

1. पढ़िये और याद कीजिए

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
पाठम्	पाठौ	पाठान्
वृषम्	वृषौ	वृषान्
अश्वम्	अश्वौ	अश्वान्

2. अकारान्त पु. शब्दों के अन्त में क्रमशः अम्, औ, आन् प्रत्यय जोड़कर कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति) के रूप बनाते हैं। इसका चिह्न "को" होता है।

लिखो–

3. निम्नलिखित शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए–

विद्यालयम्, जनकः, शिक्षकाः, कृषकौ, मोदकम्, देवालयः।

4. इन शब्दों के कर्म कारक (द्वितीया विभक्ति) के रूप लिखिए—जैसे—खगम् खगौ खगान्
अश्वः, छात्रः, वानरः, भक्तः, मृगः, लेखः।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) सेवक घोड़े ले जाता है।
(ख) छात्र पाठ पढ़ते हैं।
(ग) हम दो शेर देखते हैं।
(घ) छात्र अध्यापकों को नमस्कार करते हैं।
(ङ) हम बन्दरों को देखते हैं।

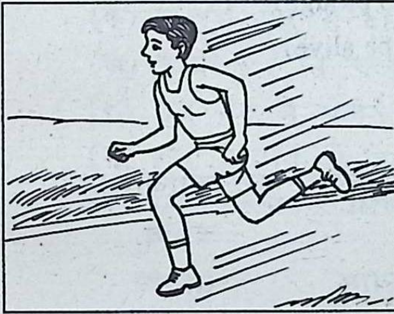
षोडशः पाठः

करण कारक (तृतीया विभक्ति)

कन्दुकम्, पादः, स्था (तिष्ठ्), कर्ष्, अन्धः, कर्णः, बधिरः, जीव्, हस्तः



बालः कन्दुकेन क्रीडति।
छात्रौ कन्दुकेन क्रीडतः।
जनकः पुत्रेण सह धावति।
आवाम् कलमेन लिखावः।



अहम् चरणाभ्याम् चलामि।
त्वम् पादाभ्याम् धावसि।
बालकः हस्ताभ्याम् क्रीडति।
नरः नेत्राभ्याम् पश्यति।



छात्राः छात्रैः सह गायन्ति।
बालकाः बालकैः सह तिष्ठन्ति।
मृगाः मृगैः सह धावन्ति।
अश्वः चरणैः चलति।

छात्राः कन्दुकैः क्रीडन्ति।
कृषकाः वृषैः क्षेत्रम् कर्षन्ति।
नरः नेत्राभ्याम् अन्धः अस्ति।
किम् त्वम् कर्णाभ्याम् बधिरः असि?

बालः दुग्धेन जीवति।

आवाम् हस्ताभ्याम् नमावः।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

सह	–	साथ (With)
कन्दुकः	–	गेंद (Ball)
पादः	–	पैर (Foot)
अन्धः	–	अन्धा (Blind)
कर्णः	–	कान (Ear)
बधिरः	–	बहरा (Deaf)
हस्तः	–	हाथ (Hand)
स्था (तिष्ठ)	–	बैठना (To sit)
कर्ष	–	जोतना (To plough)
जीव्	–	जीना (To be alive)

याद करो–

1. तृतीया विभक्ति के रूप बोलकर याद कीजिए–

ए.व.	द्वि.व.	ब. व.
बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
छात्रेण	छात्राभ्याम्	छात्रैः
पुत्रेण	पुत्राभ्याम्	पुत्रैः

2. अकारान्त पुल्लिग शब्दों के साथ तृतीया विभक्ति के रूपों में क्रमशः एन, आभ्याम्, ऐः प्रत्यय जोड़ते हैं। लेकिन किसी शब्द में 'न' से पहले र अथवा ष हो तो न का ण हो जाता है। जैसे–पुत्रेण, पुत्राभ्याम्, पुत्रैः; वृषेण, वृषाभ्याम्, वृषैः। इसका चिह्न 'से' (के द्वारा) होता है।

लिखो—

3. नीचे लिखे शब्दों के तृतीया विभक्ति के रूप लिखिए—

   बालः, पादः, मृगः, वृषः, हस्तः।

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

   छात्रः .... सह क्रीडति।

   अश्वाः .... चलन्ति।

   नरः .... धावति।

   बालः .... दुग्धं पिबति।

   सः .... अन्धः।

   नरः .... बधिरः।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

   (क) बालक मुँह से दूध पीता है।

   (ख) हाथी पैरों से चलता है।

   (ग) हम गेंद से खेलते हैं।

   (घ) लड़की हाथ से जल पीती है।

   (ङ) तुम कलम से लिखते हो।

सप्तदशः पाठः

सम्प्रदान कारक (चतुर्थी विभक्ति)

धनिकः, याचकः, पारितोषिकम्, घासम्, निर्धनः, परोपकारः, दर्शनम्, देवः, कुक्कुरः, दा (यच्छ्), वि+तृ (वितर्)



जनकः पुत्राय पुस्तकम् यच्छति।
पुस्तकानि ज्ञानाय भवन्ति।
धनिकः सेवकाय धनं यच्छति।
शिक्षकः छात्राय पुस्तकानि आनयति।

धनिकः याचकाभ्याम् भोजनम् यच्छति।
शिक्षकः छात्राभ्याम् पारितोषिकम् यच्छति।
कृषकः वृषाभ्याम् घासम् आनयति।
जनकः पुत्राभ्याम् मोदकान् यच्छति।



धनिकः निर्धनेभ्यः वस्त्राणि यच्छति।
सेवकः बालकेभ्यः कलमानि आनयति।
अहम् याचकेभ्यः वस्त्राणि यच्छामि।
आचार्यः छात्रेभ्यः मोदकान् वितरति।

वृक्षाः परोपकाराय भवन्ति।
देवाः दर्शनाय भवन्ति।
सैनिकाः देशाय जीवन्ति।
कुक्कुराः भोजनाय धावन्ति।
शिक्षकाः छात्रेभ्यः ज्ञानं यच्छन्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

धनिकः	—	धनवान (Rich)
याचकः	—	भिखारी (Beggar)
पारितोषिकम्	—	पुरस्कार (Prize)
घासम्	—	घास (Grass)
निर्धनः	—	गरीब (Poor man)
परोपकारः	—	दूसरे की भलाई (Benevolence)
दर्शनम्	—	देखना (Sight)
देवः	—	देवता (God)
कुक्कुरः	—	कुत्ता (Dog)
दा (यच्छ्)	—	देना (To give)
वि+तृ (वितर्)	—	बाँटना (To distribute)

याद करो—

1. इन रूपों को बोलकर याद करो—

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
पुत्राय	पुत्राभ्याम्	पुत्रेभ्यः
छात्राय	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
सेवकाय	सेवकाभ्याम्	सेवकेभ्यः

2. अकारान्त पुल्लिग शब्दों के अन्त में क्रमशः "आय, आभ्याम् , एभ्यः" प्रत्यय जोड़कर चतुर्थी विभक्ति के रूप बनाते हैं। जैसे—देवाय, देवाभ्याम् , देवेभ्यः। इसका चिह्न 'को, के लिए' होता है।

लिखो—

3. नीचे लिखे शब्दों का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए- धनिकः, छात्राय, बालकेभ्यः, परोपकाराय, भोजनाय।
4. इन शब्दों को हिन्दी में लिखिए— ज्ञानाय, याचकाभ्याम्, पारितोषिकम्, यच्छति, आनयति।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

(क) सूरज प्रकाश के लिए होता है।

(ख) पुस्तक ज्ञान के लिए है।

(ग) किसान बैल ले जाता है।

(घ) कुत्ते भोजन के लिए घूमते हैं।

(ङ) वृक्ष परोपकार के लिए होता है।

अष्टादशः पाठः

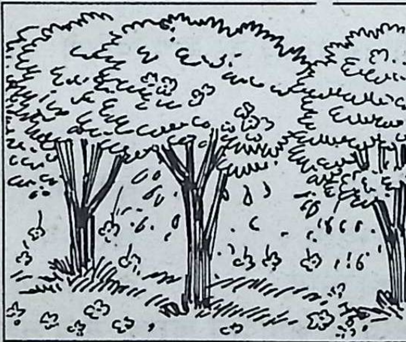
अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति)

पत्रम्, मालाकारः, पादपः, ग्रामः, कुतः, अनुजः, मिष्ठान्नम्, पत्



बालकः गृहात् आगच्छति।
छात्रः विद्यालयात् आगच्छति।
कृषकः क्षेत्रात् आगच्छति।
बालः अश्वात् पतति।
फलम् वृक्षात् पतति।

बालकौ अश्वाभ्याम् पततः।
फलानि वृक्षाभ्याम् पतन्ति।
नराः गृहाभ्याम् आगच्छन्ति।



पत्राणि वृक्षेभ्यः पतन्ति।
फलानि वृक्षेभ्यः मिलन्ति।
मालाकारः पादपेभ्यः पुष्पाणि त्रोटयति।
बालकाः ग्रामेभ्यः आगच्छन्ति।

(संजीवः राजीवः च प्रविशतः)

संजीवः त्वम् कुतः आगच्छसि?
राजीवः अहम् विद्यालयात् आगच्छामि।

संजीवः— त्वम् गृहात् किम् आनयसि?
राजीवः— अहम् गृहात् पुस्तकानि आनयामि।
संजीवः— त्वम् पुष्पाणि कुतः आनयसि?
राजीवः— अहम् उद्यानात् पुष्पाणि आनयामि।
संजीवः— त्वम् अनुजाय किम् यच्छसि?
राजीवः— अहम् अनुजाय फलम् मिष्ठान्नम् च यच्छामि।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

पत्रम् — पत्ता (Leaf)
मालाकारः — माली (Gardener)
पादपः — पौधा (Plant)
ग्रामः — गाँव (Village)
कुतः — कहाँ से (From where)
अनुजः — छोटा भाई (Younger brother)
मिष्ठान्नम् — मिठाई (Sweet-meat)
पत् — गिरना (To fall)

याद करो—

1. अपादान कारक (पञ्चमी विभक्ति) के रूप पढ़िये और याद कीजिए—

ए. व.	द्वि व.	ब.व.
वृक्षात्	वृक्षाभ्याम्	वृक्षेभ्यः
छात्रात्	छात्राभ्याम्	छात्रेभ्यः
बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः

2. अकारान्त पु. शब्दों के अन्त में अपादान कारक में क्रमशः 'आत्, आभ्याम्, एभ्यः' प्रत्यय जोड़कर शब्द रूप बनाते हैं। अपादान कारक का चिह्न 'से' (अलग होना) होता है जब कि करण कारक के चिह्न 'से' का अर्थ 'के द्वारा' होता है। अपादान तथा करण कारक का अन्तर—जैसे—

लड़का बस से जाता है (करण कारक)। लड़का बस से गिरता है (अपादान कारक)।

लिखो—

3. इन शब्दों के पञ्चमी विभक्ति के रूप लिखिए—

	ए. व.	द्वि.व.	ब.व.
नरः	....	....	....
छात्रः	....	....	....
वृक्षः	....	....	....
बालकः	....	....	....
पादपः	....	....	....

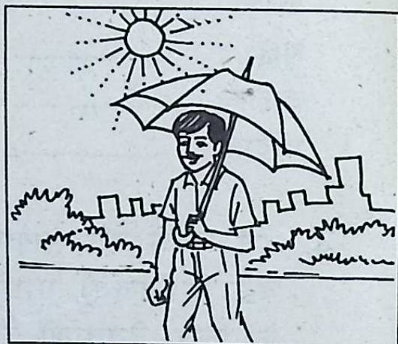
4. इन शब्दों को संस्कृत में लिखिए—
वृक्ष से (अलग), पौधों से (अलग), बालक के द्वारा, पुत्रों के लिए, देवताओं के लिए।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) पत्ते पौधों से गिरते हैं।
(ख) मुँह से फल खाता है।
(ग) राम कलम से लिखता है।
(घ) पुत्र पिता से कलम लाता है।
(ङ) लड़के बगीचे से फूल लाते हैं।
(च) छात्र अध्यापक से पुस्तक लाता है।

नवदशः पाठः

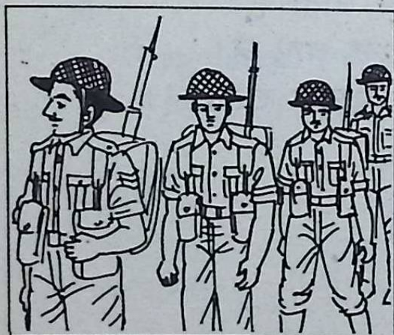
सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति)

आतपः, वर्णः, पादत्राणम्, रक्षकः, रक्तः, वीरः, पितामहः, हरितः, उपयोगः, रसम्, दाडिमः।



सूर्यस्य आतपः तीव्रः भवति।
चन्द्रस्य प्रकाशः शीतलः भवति।
ग्रामस्य बालकाः विद्यालयं गच्छन्ति।
कृषकस्य गृहं दूरम् अस्ति।
हंसस्य वर्णः श्वेतः भवति।

छात्रयोः जनकः अत्र आगच्छति।
पादत्राणे पादयोः रक्षकौ स्तः।
रामस्य हस्तयोः वर्णः रक्तः न अस्ति।
पुत्रयोः वस्त्राणि जनकः आनयति।



भारतस्य सैनिकाः वीराः सन्ति।
ते देशस्य रक्षकाः सन्ति।
सैनिकानाम् समूहः गच्छति।
बालकानाम् पितामहः आगच्छति।
शुकानाम् वर्णः हरितः भवति।

(रामस्य गृहम्)

रामस्य गृहम् अत्र अस्ति। तस्य अनुजः अपि आगच्छति। तयोः जनकः फलानि आनयति। फलानाम् उपयोगः लाभदायकः भवति।

तेषाम् फलानाम् रसं बालकाः पिबन्ति। तस्य अनुजः दाडिमानाम् रसं स्नेहेन पिबति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

आतपः — धूप (Sunshine)
वर्णः — रंग (Colour)
पादत्राणम् — जूता (Shoe)
रक्षकः — रक्षा करने वाला (Guard)
रक्तः — लाल (Red)
वीरः — बहादुर (Brave)
पितामहः — दादा (Grand father)
हरितः — हरा (Green)
उपयोगः — प्रयोग (Use)
रसम् — रस (Juice)
दाडिमः — अनार (Pomegranate)

याद करो—

1. सम्बन्ध कारक (षष्ठी विभक्ति) के रूप इस प्रकार याद कीजिए—

ए. व.	द्वि.व.	ब.व.
बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
छात्रस्य	छात्रयोः	छात्राणाम्
हंसस्य	हंसयोः	हंसानाम्

2. अकारान्त पु. शब्दों के अन्त में क्रमशः 'अस्य—अयोः—आनाम्' प्रत्यय जोड़कर षष्ठी विभक्ति के रूप बनाए जाते हैं। जैसे—देवस्य देवयोः देवानाम्।
इसका चिह्न 'का, के, की' होता है।

लिखो–

3. रिक्त स्थानों की विभिन्न रूपों से पूर्ति कीजिए–

चन्द्रस्य	....	....
....	सैनिकयोः	....
....	....	पुत्राणाम्
पादस्य	....	....

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) गाँव के बालक घर जा रहे हैं।

(ख) बच्चों के पिता पुस्तकें लाते हैं।

(ग) सैनिक देश की रक्षा करते हैं।

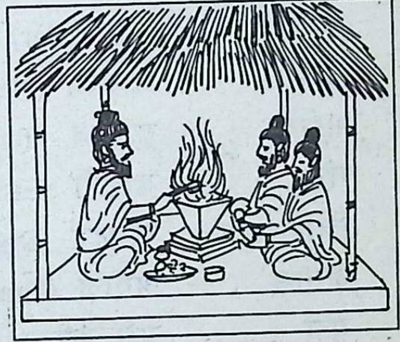
(घ) राम के हाथों का रंग लाल है।

(ङ) छात्रों की पुस्तकें यहाँ हैं।

विंशः पाठः

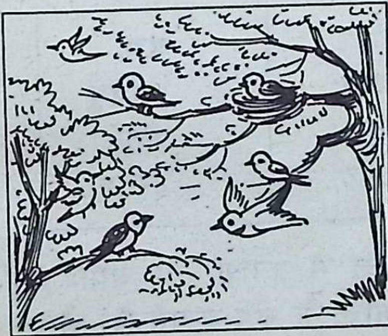
अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति)

तापसः, पावकः, आश्रमः, प्रासादम्, अंगुष्ठः, कर्णः, नीड़ः, सरोवरः, मीनः, चिकित्सकः, अन्नम्, यज्, तर् (तृ)



तापसाः आश्रमे वसन्ति।
तापसाः पावके यजन्ति।
आश्रमः वने अस्ति।
नृपाः प्रासादे वसन्ति।
नराः गृहे निवसन्ति।

नरस्य हस्तयोः अंगुष्ठौ स्तः।
वृषस्य पादयोः अंगुष्ठौ न भवतः।
विनोदस्य कर्णयोः रोगः न अस्ति।
नरेशस्य नेत्रयोः पीड़ा अस्ति।



वृक्षेषु नीड़ा भवन्ति।
नीड़ेषु खगाः कूजन्ति।
सरोवरेषु मीनाः तरन्ति।
छात्राः विद्यालयेषु पठन्ति।

ग्रामे जनाः वसन्ति। तत्र कृषकाः गृहेषु वसन्ति। चिकित्सकाः तु नगरेषु वसन्ति। प्रातःकाले जनाः नगरं गच्छन्ति। सायंकाले पुनः आगच्छन्ति। ग्रामेषु अन्नानि फलानि च भवन्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

तापसः – तपस्वी, मुनि (Sage)
पावकः – आग (Fire)
आश्रम – मुनियों का स्थान (Hermitage)
प्रासादम् – महल (Palace)
अंगुष्ठः – अँगूठा (Thumb)
कर्णः – कान (Ear)
नीड़ः – घोंसला (Nest of bird)
सरोवरः – तालाब (Tank)
मीनः – मछली (Fish)
चिकित्सकः– डाक्टर (Doctor)
अन्नम् – अनाज (Grain)
यज् – यज्ञ करना (To Sacrifice)

याद करो–

1. अधिकरण कारक (सप्तमी विभक्ति) के रूप याद कीजिए–

ए.व.	द्वि.व.	ब.व.
छात्रे	छात्रयोः	छात्रेषु
जने	जनयोः	जनेषु
हस्ते	हस्तयोः	हस्तेषु

2. अकारान्त पु. शब्दों के अन्त में क्रमशः "ए अयोः एषु' प्रत्यय जोड़कर सप्तमी विभक्ति के रूप बनाते हैं। जैसे– नरे नरयोः नरेषु। इसका चिह्न 'में, पर' होता है।

लिखो–

3. रिक्त स्थानों में उचित रूप लिखिए–

ए. व.	**द्वि व.**	**ब. व.**
कर्णे	....	....
....	पादयोः	....
....	....	ग्रामेषु

4. संस्कृत में लिखिए–
घरों में, हाथों में, वृक्षों पर, पैर में, आँख में, छात्रों का।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–
(क) धनवान नगरों में रहते हैं।
(ख) डाक्टर गाँवों में भी रहते हैं।
(ग) पक्षी वृक्षों पर कूजते हैं।
(घ) मछली जल में रहती है।
(ङ) गोपाल के पिताजी घर में हैं।

एकविंशः पाठः

सम्बोधन

पश्चात्, पथिकः, बुभुक्षितः, स्मृ (स्मर्)



आचार्यः – हे विनोद! किम् त्वम् नित्यम् पाठम् स्मरसि?

छात्रः – आम् गुरुदेव! अहं नित्यं एकं पाठम् स्मरामि।

आचार्यः – हे बालक! किम् त्वम् संस्कृतम् पठसि?

छात्रः – आम् श्रीमन्! अहम् संस्कृतम् पठामि रूपाणि च स्मरामि।

आचार्यः – हे रामश्यामौ! युवाम् कुत्र वसथः।

छात्रौ – श्रीमन्! आवाम् ग्रामे एव वसावः।

आचार्यः – हे राजकुमारौ! किम् युवाम् गृहे जनकम् नमथः?

छात्रौ – आम् गुरुवर! आवाम् प्रातः स्व जनकम् नमावः।

आचार्यः – भोः छात्राः! यूयम् गृहेषु पठथ अथवा लिखथ?

छात्राः – आम् गुरुवर! वयम् गृहेषु पाठं पठामः लिखामः च।

आचार्यः – भोः छात्राः! विद्यालयस्य पश्चात् यूयम् गृहं गच्छथ आपणम् वा?

छात्राः — श्रीमन्! वयं विद्यालयस्य पश्चात् गृहं गच्छामः।
(पथिकः बालः च आगच्छतः)

बालः — हे मनुष्य! त्वम् कः असि?

पथिकः — हे बाल! अहम् पथिकः अस्मि।

बालः — भोः पथिक! त्वम् कुतः आगच्छसि?

पथिकः — बाल! अहम् वनात् आगच्छामि।

बालः — भोः पथिक! त्वं कथम् अत्र आगच्छसि?

पथिकः — बाल! अहं बुभुक्षितः अस्मि अतः अत्र आगच्छामि।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

पश्चात् — बाद में (After)
पथिकः — राहगीर (Traveller)
बुभुक्षितः — भूखा (Hungry)
स्मृ (स्मर्) — याद करना (To learn)

याद करो—

1. संबोधन के रूप इस प्रकार याद कीजिए—

ए. व.	द्वि व.	ब. व.
हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!
छात्र!	छात्रौ!	छात्राः!
पथिक!	पथिकौ!	पथिकाः!

2. अकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप संबोधन में भी प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक) की तरह ही बनते हैं। केवल उनके अन्त में संबोधन का चिह्न (!) जोड़ा जाता है। एक वचन में विसर्ग नहीं लगते हैं।

लिखो—

3. बालक और छात्र शब्दों के रूप सभी विभक्तियों में लिखिए।

4. निम्नलिखित शब्दों के हिन्दी में अर्थ तथा विभक्ति और वचन लिखिए।

छात्राणाम्, बालकेभ्यः, नगरेषु, रामेण, पथिकाय, छात्रान्।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–

(क) पिता पुत्र को पुस्तक देता है।

(ख) बालक कलम से लिखता है।

(ग) पेड़ से पत्ता गिरता है।

(घ) राम का भाई पत्र लिखता है।

(ङ) वृक्षों पर पक्षी रहते हैं।

(च) हे पक्षी! तुम क्या खाते हो?

द्वाविंशः पाठः

भविष्यत्काल (लृट् लकार)

श्वः, सकलः, उद्यानम्, आम्, भू (भव्)

रमेशः विद्यालयं गमिष्यति।
रामः मोहनः अपि गमिष्यतः।
ते सर्वे छात्राः विद्यालयं गमिष्यन्ति।
त्वम् श्वः कुत्र गमिष्यसि ?
अहम् श्वः गृहम् गमिष्यामि।
किम् युवाम् श्वः मन्दिरम् न गमिष्यथः ?
आवाम् श्वः मन्दिरं न गमिष्यावः।
किम् यूयम् प्रातः विद्यालयम् गमिष्यथ ?
आम्! वयं प्रातः विद्यालयं गमिष्यामः।
रामः पाठम् पठिष्यति।
सः कन्दुकेन क्रीडिष्यति।
रामः श्यामः च पाठम् पठिष्यतः।
तौ अपि क्रीडिष्यतः।
सकलाः बालकाः पाठम् पठिष्यन्ति।
ते अपि कन्दुकेन क्रीडिष्यन्ति।

वार्तालापः

रमेशः —हे राजीव! त्वम् प्रातः उद्यानं चलिष्यसि ?
राजीवः —अहम् मोहनः च उद्यानं चलिष्यावः।
रमेशः —युवाम् उद्यानात् किम् आनेष्यथः ?
राजीवः —वयम् सकलाः उद्यानात् पुष्पाणि आनेष्यामः।
रमेशः —किम् तत्र मालाकारः अपि भविष्यति ?
राजीवः —आम्! वयम् मालाकारेण सह एव भ्रमिष्यामः।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

भविष्यत् – आने वाला समय (Future)
श्वः – आने वाला कल (Tomorrow)
सकलाः – सब (All)
उद्यानम् – बगीचा (Garden)
आम् – हाँ (Yes)
भू (भव्) – होना (To be)

याद करो–

1. भविष्यत्काल (लृट् लकार) के रूप इस प्रकार याद कीजिए–

ए. व.	द्वि व.	ब. व.
क्रीडिष्यति	क्रीडिष्यतः	क्रीडिष्यन्ति
क्रीडिष्यसि	क्रीडिष्यथः	क्रीडिष्यथ
क्रीडिष्यामिं	क्रीडिष्यावः	क्रीडिष्यामः

2. लृट् लकार में मूल धातुओं के अन्त में नीचे लिखे प्रत्यय जोड़कर क्रिया बनाते हैं जैसे–

	ए. व.	द्वि व.	ब. व.
प्र. पु.	.... इष्यति	.... इष्यतः	.... इष्यन्ति
म. पु.	.... इष्यसि	.... इष्यथः	.... इष्यथ
उ. पु.	.... इष्यामि	.... इष्यावः	..... इष्यामः

कुछ मूल धातुओं में केवल 'स्यति' आदि प्रत्यय ही जुड़ते हैं।

लिखो—

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित रूपों द्वारा कीजिए—

ए. व.	द्वि व.	ब. व.
चलिष्यति	....	....
....	खादिष्यथः	....
....	....	भविष्यामः

4. नीचे लिखी क्रियाओं का संस्कृत वाक्यों में प्रयोग कीजिए—
पठिष्यामि, क्रीडिष्यथः, चलिष्यसि, गमिष्यावः, भविष्यति।

5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) मैं राम के साथ खेलूँगा।
(ख) हम विद्यालय नहीं जाएँगे।
(ग) तुम सब अब कहाँ पढ़ोगे?
(घ) वे भी पाठ पढ़ेंगे।
(ङ) सुरेश शाम को घर जायेगा।

त्रयोविंशः पाठः

संख्या

चन्द्रः, हस्तः, कालः, तत्त्वः, लूता, पादः, ग्रहः

एकः — चन्द्रः एकः अस्ति।

द्वौ — हस्तौ द्वौ भवतः।

त्रयः — त्रयः कालाः भवन्तिः—वर्तमानः, भूतः भविष्यत् च।

चत्वारः — वेदाः चत्वारः सन्ति—ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः अथर्ववेदः च।

पञ्च — तत्त्वाः पञ्च भवन्ति—
पृथ्वी, जलम्, अग्निः, वायुः आकाशः च।

षट् — भारतवर्षे षट् ऋतवः भवन्ति—वसन्तः, ग्रीष्मः, वर्षा, शरद्, हेमन्तः शिशिरः च।

सप्त — सप्ताहे सप्त दिवसाः भवन्ति—रविवारः, सोमवारः, मंगलवारः, बुधवारः, गुरूवारः, शुक्रवारः, शनिवारः च।

अष्ट — लूतायाः अष्ट पादाः भवन्ति।

नव — ग्रहाः नव भवन्ति—सूर्यः, चन्द्रः, भौमः, बुधः, गुरूः, भृगुः, शनिः, राहुः केतुः च।

दश — मनुष्यस्य हस्तयोः दश अंगुल्यः भवन्ति।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

चन्द्रः — चन्द्रमा (Moon)

हस्तः — हाथ (Hand)

कालः — समय (Tense)

तत्त्वः — तत्त्व (Element)

लूता — मकड़ी (Spider)
पादः — पैर (Leg)
अंगुली — उँगली (Finger)
ग्रहः — नक्षत्र (Planet)

याद करो—

1. इन संख्याओं को संस्कृत में बोलकर याद कीजिए—
एकः, द्वौ, त्रयः, चत्वारः, पञ्च, षट्, सप्त, अष्ट, नव, दश।
2. चार वेदों के नाम याद कीजिए—
ऋग्वेदः, यजुर्वेदः, सामवेदः, अथर्ववेदः च।

लिखो—

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—
(क) तत्त्वाः .... भवन्ति।
(ख) ऋतवः .... भवन्ति।'
(ग) सप्ताहे .... दिवसाः भवन्ति।
(घ) ग्रहाः .... भवन्ति।
4. नीचे लिखी संख्याओं को संस्कृत में लिखिए—
पाँच, आठ, चार, नौ, सात, तीन।
5. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
(क) सुरेश के हाथ में पाँच फूल हैं।
(ख) वन में तीन शेर हैं।
(ग) सात लड़के खेलते हैं।
(घ) घोड़े के चार पैर होते हैं।
(ङ) भौंरे के छः पैर होते हैं।

चतुर्विंशः पाठः

भोजनम्

मध्याह्न, रोटिका, सूपः, दधि, अवलेहः, मिष्ठान्नम्, पुष्टः, किञ्चित्, वादन, भू (भव्)



महेशः — रमेश! त्वम् कुत्र गच्छसि?

रमेशः — अहम् भोजनाय गच्छामि।

महेशः — तव भोजनस्य समयः कदा भवति?

रमेशः — अहम् मध्याह्ने भोजनम् करोमि।

महेशः — तव भोजनम् कुत्र भवति?

रमेशः — मम भोजनम् स्वपरिवारेण सह गृहे एव भवति।

महेशः — तव भोजने कानि कानि वस्तूनि भवन्ति?

रमेशः — मम भोजने रोटिका, शाकम्, सूपम्, दधि, अवलेहः, मिष्ठान्नम् च भवन्ति।

महेशः — एतेन भोजनेन के के लाभाः भवन्ति?

रमेशः — एतेन भोजनेन स्वास्थ्यम् पुष्टं भवति। शरीरे स्फूर्तिः, कार्यक्षमता च भवतः।

महेशः — किम् भोजनेन सह फलानि न खादसि?

रमेशः — अहम् सायम् पञ्चवादन काले फलानि खादामि।

महेशः — सायम् तव भोजनम् कदा भवति?

रमेशः — अहम् सायम् सप्तवादन काले भोजनम् करोमि।

महेशः — भोजनस्य पश्चात् किञ्चित् भ्रमामि पुनः पाठं स्मरामि लिखामि च।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ—

मध्याह्न — दोपहर (Noon)
रोटिका — रोटी (Bread)
सूपः — दाल (Pulse)
दधिः — दही (Curd)
अवलेहः — चटनी (Chutney)
मिष्ठान्नम् — मिठाई (Sweet-meat)
पुष्ट — मोटा-ताजा (Fat)
किञ्चित् — कुछ (Some)
वादन — बजे (O' clock)
भू (भव्) — होना (To be)

याद करो—

1. इन शब्दों को पढ़ो और अर्थ याद करो—
   रोटिका, सूपः, दधि, अवलेहः, किञ्चित्।
2. पच्, भ्रम्, भू धातुओं के लट् लकार के रूप याद कीजिए।

लिखो—

3. इन शब्दों को संस्कृत में लिखिए—
   रोटी, दाल, दही, चटनी, मिठाई।
4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए—
   (क) मैं सुबह दूध पीता हूँ।
   (ख) वह दोपहर में खाना खाता है।
   (ग) वह शाम को फल खाती है।
   (घ) मैं भोजन के बाद घूमता हूँ।
   (ङ) हम शाम को पाठ याद करते हैं।

पञ्चविंशः पाठः

मूर्खः वानरः

परिश्रमः, एकदा, सहसा, वृष्टिः, आर्द्रः, काम्पतः, दुःखम्, क्रुद्धः, क्षुद्रः, अण्डम्, अधः, महाजनः, वरम्, रच्, स्था, अनु+भू, श्रु, चिन्त्, निन्द्, त्रुट्



गङ्गातीरे एकः विशालः वृक्षः अस्ति। वृक्षे अनेके खगाः अपि वसन्ति। खगाः परिश्रमेण स्व नीड़ानि रचयन्ति। तेषु च सखेन वसन्ति। तत्र वृक्षे एकः वानरः अपि आगच्छति। सः अपि वृक्षस्य शाखायाम् तिष्ठति।

एकदा सहसा वृष्टिः भवति। सः वानरः वृष्टिजलेन आर्द्रः भवति। शीतलः वायुः वहति। सः कम्पितः भवति। खगाः दुःखितम् वानरं पश्यन्ति तदा ते कष्टम् अनुभवन्ति। ते दुःखितम् वानरम् कथयन्ति–भोः वानर! त्वम् कथम् शीतस्य कष्टम् अनुभवसि? त्वम् स्व गृहम् कथम् न रचयसि?

वानरः खगानाम् वचनानि श्रृणोति क्रुद्धः च भवति। सः

चिन्तयति–एते क्षुद्राः खगाः माम् निन्दन्ति। सः खगानाम् नीड़ानि त्रोटयति। खगानाम् अण्डानि अधः पतन्ति।

महाजनाः कथयन्ति–**"मूर्खाय उपदेशः न वरम्"**।

पढ़ो और समझो

शब्दार्थ–

परिश्रमः	–	मेहनत (Labour)
एकदा	–	एक बार (Once)
सहसा	–	अचानक (Suddenly)
वृष्टिः	–	बरसात (Rain)
आर्द्रः	–	भीगा (Wet)
कम्पितः	–	काँपता हुआ (Trembled)
दुःखम्	–	दुःख (Sorrow)
क्रुद्धः	–	गुस्सा (Angry)
क्षुद्रः	–	छोटा (Tiny)
अण्डम्	–	अण्डा (Egg)
अधः	–	नीचे (Down)
महाजनः	–	महान् पुरुष (Great man)
वरम्	–	अच्छा (Good)
रच्	–	बनाना (To make)
स्था (तिष्ठ)	–	बैठना (To sit)
अनु+भू	–	अनुभव करना (To feel)
श्रु	–	सुनना (To hear)
चिन्त्	–	सोचना (To think)
निन्द्	–	निन्दा करना (To censure)
त्रुट्	–	तोड़ना (To break)

याद करो–

1. रच्, स्था (तिष्ठ), चिन्त् धातुओं के लट् लकार में रूप याद कीजिए।

2. इस कहानी को हिन्दी में लिखकर याद कीजिए।

लिखो–

3. इन शब्दों को संस्कृत में लिखिए–
   अचानक, बरसात, गीला, बैठना, नीचे, तोड़ना।

4. संस्कृत में अनुवाद कीजिए–
   (क) वृक्ष पर पक्षी रहते हैं।
   (ख) यहाँ बन्दर नहीं हैं।
   (ग) आज बरसात हो रही है।
   (घ) बन्दर सब जगह घूमते हैं।
   (ङ) वह पेड़ के नीचे बैठता है।

व्याकरण

वर्णमाला

स्वर—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ॡ ए ऐ ओ औ

अनुस्वार— ं (अं)

अनुनासिक— ँ

विसर्ग— : (अः)

व्यञ्जन—	क्	ख्	ग्	घ्	ङ्
	च्	छ्	ज्	झ्	ञ्
	ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्
	त्	थ्	द्	ध्	न्
	प्	फ्	ब्	भ्	म्
	य्	र्	ल्	व्	
	श्	ष्	स्	ह्	

संयुक्त अक्षर—	क्ष—	क्	+	ष
	त्र—	त्	+	र
	ज्ञ—	ज्	+	ञ
	श्र—	श्	+	र
	द्य—	द्	+	य

व्यञ्जनों के साथ स्वर जोड़ना—

क्	+	अ	=	क
क्	+	आ	=	का
क्	+	इ	=	कि
क्	+	ई	=	की
क्	+	उ	=	कु
क्	+	ऊ	=	कू

क्	+	ऋ	=	कृ
क्	+	ॠ	=	कॄ
क्	+	ए	=	के
क्	+	ऐ	=	कै
क्	+	ओ	=	को
क्	+	औ	=	कौ
क्	+	अं	=	कं
क्	+	अः	=	कः

इसी प्रकार सभी व्यञ्जनों में स्वरों की मात्राएँ जुड़ती हैं तभी इनका उच्चारण स्पष्ट रूप से होता है।

कारकों का सामान्य ज्ञान

हिन्दी में सात कारक होते हैं और आठवाँ सम्बोधन कारक होता है। कारक को संस्कृत में विभक्ति कहते हैं। इनके अलग-अलग चिह्न होते हैं। सम्बोधन को संस्कृत में भी सम्बोधन ही कहते हैं। अतः कारकों के अनुसार क्रमशः सप्तमी विभक्ति और आठवाँ सम्बोधन है।

कारक (विभक्ति) और इनके चिह्न इस प्रकार हैं—

कारक (Case)	विभक्ति (Vibhakti)	चिह्न (Symbol)
कर्ता (Nominative)	प्रथमा	ने
कर्म (Accusative)	द्वितीया	को
करण (Instrumental)	तृतीया	से, के द्वारा
सम्प्रदान (Dative)	चतुर्थी	को, के लिए
अपादान (Ablative)	पंचमी	से (अलग होना)
सम्बन्ध (Genitive)	षष्ठी	का, के, की
अधिकरण (Locative)	सप्तमी	में, पर
सम्बोधन (Vocative)	—	हे, अरे, भोः

अकारान्त पुल्लिग शब्द

नर—(आदमी)

विभक्ति	चिह्न	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	ने	नरः	नरौ	नराः
द्वितीया	को	नरम्	नरौ	नरान्
तृतीया	से (कि द्वारा)	नरेण	नराभ्याम्	नरैः
चतुर्थी	के लिए	नराय	नराभ्याम्	नरेभ्यः
पञ्चमी	से (अलग होना)	नरात्	नराभ्याम्	नरेभ्यः
षष्ठी	का, की, के	नरस्य	नरयोः	नराणाम्
सप्तमी	में, पर	नरे	नरयोः	नरेषु
सम्बोधन	हे, अरे	हे नर!	हे नरौ!	हे नराः!

नियम—यदि शब्द में 'न' से पूर्व र अथवा ष हो तो 'न' का 'ण' हो जाता है लेकिन अन्तिम् 'न्' को ण नहीं होता। जैसे—नरान्।

बालक (बच्चा)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालकः	बालकौ	बालकाः
द्वितीया	बालकम्	बालकौ	बालकान्
तृतीया	बालकेन	बालकाभ्याम्	बालकैः
चतुर्थी	बालकाय	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
पञ्चमी	बालकात्	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
षष्ठी	बालकस्य	बालकयोः	बालकानाम्
सप्तमी	बालके	बालकयोः	बालकेषु
सम्बोधन	हे बालक!	हे बालकौ!	हे बालकाः!

इसी प्रकार सभी अकारान्त पु. शब्दों के रूप बनेंगे जैसे—राम, श्याम, देव, छात्र, नृप, गज, अश्व, वानर, मृग, खग, मयूर, कपोत, मूषक, बाल आदि।

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

फल

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	फलम्	फले	फलानि
द्वितीया	फलम्	फले	फलानि
तृतीया	फलेन	फलाभ्याम्	फलैः
चतुर्थी	फलाय	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
पञ्चमी	फलात्	फलाभ्याम्	फलेभ्यः
षष्ठी	फलस्य	फलयोः	फलानाम्
सप्तमी	फले	फलयोः	फलेषु
सम्बोधन	हे फल!	हे फले!	हे फलानि!

अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दों के रूप प्रथमा, द्वितीया विभक्ति में समान होते हैं तथा तृतीया विभक्ति से सप्तमी तक अकारान्त पु. शब्द बालक के समान होंगे। इसी प्रकार अकारान्त नपुं. शब्द– पुस्तक, जल, पुष्प, गृह, पत्र, नेत्र, उद्यान, धन आदि शब्दों के रूप बनेंगे।

आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द

बालिका

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	बालिका	बालिके	बालिकाः
द्वितीया	बालिकाम्	बालिके	बालिकाः
तृतीया	बालिकया	बालिकाभ्याम्	बालिकाभिः
चतुर्थी	बालिकायै	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
पञ्चमी	बालिकायाः	बालिकाभ्याम्	बालिकाभ्यः
षष्ठी	बालिकायाः	बालिकयोः	बालिकानाम्
सप्तमी	बालिकायाम्	बालिकयोः	बालिकासु
सम्बोधन	हे बालिके!	हे बालिके!	हे बालिकाः!

इसी प्रकार लता, छात्रा, बाला, रमा, उमा, कलिका, माला, शाखा, वाटिका, सरिता, निशा, शिखा, कन्या, सीता, भार्या, प्रजा आदि के रूप बालिका के समान होंगे।

सर्वनाम शब्द

तत् (वह) पुल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सः	तौ	ते
द्वितीया	तम्	तौ	तान्

तत् (वह) स्त्रीलिंग

प्रथमा	सा	ते	ताः
द्वितीया	ताम्	ते	ताः

तत् (वह) नपुंसकलिंग

प्रथमा	तत्	ते	तानि
द्वितीया	तत्	ते	तानि

किम् (कौन) पुल्लिग

प्रथमा	कः	कौ	के
द्वितीया	कम्	कौ	कान्

किम् (कौन) स्त्रीलिंग

प्रथमा	का	के	काः
द्वितीया	काम्	के	काः

किम् (कौन) नपुंसकलिंग

प्रथमा	किम्	के	कानि
द्वितीया	किम्	के	कानि

अस्मद् (मैं) पु., स्त्री.

प्रथमा	अहम्	आवाम्	वयम्
द्वितीया	माम्	आवाम्	अस्मान्

युष्मद् (तुम) पु., स्त्री.

प्रथमा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
द्वितीया	त्वाम्	युवाम्	युष्मान्

धातु रूप

पठ् (पढ़ना) वर्तमान काल (लट् लकार)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठति	पठतः	पठन्ति
मध्यम पुरुष	पठसि	पठथः	पठथ
उत्तम पुरुष	पठामि	पठावः	पठामः

भविष्यत् काल (लृट् लकार)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उत्तम पुरुष	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

इसी प्रकार निम्नलिखित धातुओं के रूप भी तीनों कालों में समान होंगे। इनके वर्तमान काल (लट्) तथा भविष्यत् काल (लृट्) के एक-एक रूप दिए गए हैं। इनके पूरे रूप लिखकर याद कीजिए।

क्र.स.	धातु	लट् लकार (वर्तमान काल)	लृट् लकार (भविष्यत् काल)
1.	चल्	चलति	चलिष्यति
2.	खाद्	खादति	खादिष्यति
3.	क्रीड्	क्रीडति	क्रीडिष्यति
4.	खेल्	खेलति	खेलिष्यति
5.	हस्	हसति	हसिष्यति
6.	पत्	पतति	पतिष्यति
7.	धाव्	धावति	धाविष्यति

8.	वद्	वदति	वदिष्यति
9.	कूज्	कूजति	कूजिष्यति
10.	भ्रम्	भ्रमति	भ्रमिष्यति
11.	रक्ष्	रक्षति	रक्षिष्यति
12.	चर्	चरति	चरिष्यति
13.	गर्ज्	गर्जति	गर्जिष्यति
14.	मिल्	मिलति	मिलिष्यति

परिवर्तनशील धातु

गम् (गच्छ्) जाना,

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः

लृट् लकार

प्रथम पु.	गमिष्यति	गमिष्यतः	गमिष्यन्ति
मध्यम पु.	गमिष्यसि	गमिष्यथः	गमिष्यथ
उत्तम पु.	गमिष्यामि	गमिष्यावः	गमिष्यामः

इसी प्रकार की परिवर्तनशील धातुओं के कुछ रूप नीचे दिए गए हैं इनके दोनों कालों में पूरे रूप लिखकर याद कीजिए।

क्र.स.	धातु	लट् लकार	लृट् लकार
1.	स्था (तिष्ठ्)	तिष्ठति	स्थास्यति
2.	दृश् (पश्य्)	पश्यति	द्रक्ष्यति
3.	पा (पिब्)	पिबति	पास्यति
4.	गै (गाय्)	गायति	गास्यति
5.	दा (यच्छ्)	यच्छति	दास्यति
6.	नी (नय्)	नयति	नेष्यति
7.	भू (भव्)	भवति	भविष्यति

8.	इष् (इच्छ्)	इच्छति	एषिष्यति
9.	तृ (तर्)	तरति	तरिष्यति
10.	पच् (पच्)	पचति	पक्ष्यति
11.	स्मृ (स्मर्)	स्मरति	स्मरिष्यति
12.	वस् (वस्)	वसति	वत्स्यति

उपसर्गयुक्त धातुएँ

कुछ धातुओं से पूर्व उपसर्ग आ जाने से धातु का अर्थ बदल जाता है। जैसे—

उपसर्ग धातु	अर्थ
आ + गम् (गच्छ्)	आना
आ + नी (नय्)	लाना
अनु + भू (भव्)	अनुभव करना
वि + कस्	खिलना
उत् + स्था (तिष्ठ्)	उठना
वि + तृ (तर्)	बाँटना

अस् (होना) धातु

लट् लकार

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	अस्ति	स्तः	सन्ति
मध्यम पुरुष	असि	स्थः	स्थ
उत्तम पुरुष	अस्मि	स्वः	स्मः

लृट् लकार

प्रथम पुरुष	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
मध्यम पुरुष	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
उत्तम पुरुष	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

लृट् लकार में अस् धातु के स्थान पर भू होकर भविष्यति रूप बनता है।

संख्यावाची शब्द

1.	एकः	एक
2.	द्वौ	दो
3.	त्रयः	तीन
4.	चत्वारः	चार
5.	पञ्च	पाँच
6.	षट्	छः
7.	सप्त	सात
8.	अष्ट	आठ
9.	नव	नौ
10.	दश	दस

गुणवाचक विशेषण

विशेषण—जो शब्द संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता प्रकट करते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं।

विशेष्य—जिन शब्दों की विशेषता प्रकट की जाए उन्हें विशेष्य कहते हैं।

विशेषण का कोई लिंग, विभक्ति, वचन नहीं होता। इनके लिंग, विभक्ति और वचन अपने विशेष्य के अनुसार ही होते हैं। जैसे—

पुल्लिग	**स्त्रीलिंग**	**नपुंसकलिंग**
योग्यः छात्रः	योग्या छात्रा	योग्यम् मित्रम्
प्रियः बालः	प्रिया बाला	प्रियम् पुस्तकम्
श्वेतः हंसः	श्वेता शाटिका	श्वेतम् वस्त्रम्
हरितः वर्णः	हरिता वाटिका	हरितम् पत्रम्
चतुरः नरः	चतुरा बाला	चतुरम् मित्रम्
प्रथमः बालः	प्रथमा बाला	प्रथमम् पुष्पम्
सुन्दरः खगः	सुन्दरी बालिका	सुन्दरम् फलम्

अव्यय

कुछ ऐसे भी शब्द होते हैं जिनका कोई लिंग, विभक्ति, वचन नहीं होता। वे सदा एक ही रूप में रहते हैं। उन्हें अव्यय कहते हैं। इस पुस्तक में आए हुए अव्यय तथा उनके अर्थ नीचे दिए गए हैं–

अव्यय	अर्थ	अव्यय	अर्थ
अपि	भी	प्रातः	सुबह
कदा	कब	सायम्	शाम
कुत्र	कहाँ	बहिः	बाहर
अत्र	यहाँ	अद्य	आज
कथम्	क्यों	तत्र	वहाँ
सदा	हमेशा	नित्यम्	रोजाना
अधुना	अब	सह	साथ
वृथा	व्यर्थ	कुतः	कहाँ से
शनैः शनैः	धीरे-धीरे	आम्	हाँ
एकदा	एक दिन	किञ्चित्	कुछ
अधः	नीचे	सहसा	अचानक

प्रकाशक

बैस्ट बुक पब्लिशिंग हाउस

(प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता)

33/11, वैस्ट पटेल नगर, नई दिल्ली-110 008